सों कहिहैं हम नाहीं। तब ठगबोलतभे तिनपाहीं १६६ इक नृपघर हम सब जो अहईं। तत्र स्वामीयुत नौकर रहईं॥ तिन कछु नृपति अकारज कीन्हा। हमसों बधन नृपायसु दीन्हा १७० करपद काटि छोंड़ि हम दीन्हा। तासों अधिकमान उन कीन्हा॥ यह अपवाद भक्तकर जोई। सहि नहिंसकत भये प्रभु सोई १७१ धरती फाटिगई तिहिकाला। गे ठग द्रुतसमाइ पाताला॥ अनुचर घूमि नृपति पहँआये। जयदेवहि सबचरित सुनाये १७२ सुनि जयदेव दयासों पागे। कंपितकर पद मर्द्दन लागे॥ मर्द्दत जामि पूर्ववत आये। नृपहि अनुगयहहाल सुनाये १७३ स्वामिहि नृप बहु पूंछन लीन्हा। तिन वृत्तांत सकल कहि दीन्हा॥ सुनि राजा मनकरि बिश्वासा। सेवा करनलाग सहुलासा १७४ सत्य सदा भक्तनकी रीती। दुष्टहु संगकरत वेप्रीती॥ चूकतदुष्ट दुष्टता नाहीं। तिहिबिधि साधु साधुता माहीं १७५ नृपसोंकह जयदेव सुनाई। देशजान चाहौं नृपराई॥ तब राजा बहुबिनती कीन्हा। तिनको तहांजान नहिंदींन्हा १७६ आयुजाइ पद्मावति पासा। स्वामी पतिपतिव्रतवासा॥ करिबिनती निज मन्दिर लायो। सेवाहित रानीहि दृढ़ायो १७७ भरतभयो रानीकर भ्राता। भईसतीतातिय हरषाता॥ इकदिन रानी बातचलाई। निज मनमें बड़अचरजलाई १७८ सुनत हँसीं पद्मावति जबहीं। रानी कारण पूंछा तबहीं॥ उत्तरदेतभईं सुखपाई। यह नहिं प्रीतिकि रीति सुहाई१७९मुख्य प्रीति इहिभांति कहावै। पतिकी मृत्यु जबहिं सुनिपावै॥तत्त्क्षण प्राण निछावरि करई। सुनिरानी इहिबिधि उचरई १८०इहिवैसतीआप हैं एका। कहि उरमांझ बातयह छेका॥ पीछे परीपरीक्षा हेता। बचन कहो राजासों एता १८१ स्वामिहि बाटिकाहि लै जैये। सकल नगरयह बात जनैयें॥ स्वामी आजुमृत्यु को पायो। सुनि राजारानिहि समुझायो १८२ रानीके मनएक न आई। तब राजा स्वैरचो उपाई॥ अत्तिअम्बुरानी निज

आनी । पद्मावति दिगरोदन ठानी १८३ दुखित देखि पद्मावति कहई। ममस्वामी आनंद युत अहई॥ सुनि रानीलज्जा को पायो। कछुदिन में पुनि बात चलायो १८४ पद्मावति मन गुणिगुणकेतू। रानी परीपरीक्षा हेतू॥ सुनि पतिमृतक रानि मुखबानी। तत्क्षण कुनप तजो गुणखानी १८५ लखि नृपरानि दशातिन केरी। श्रीहत भै जिमि दिनशशि केरी॥ व्याकुल अमित भये नृपरानी। विरसन समजीवन निजजानी १८६ दाहन देह चिताबनवायो। स्वामी समाचार सबपायो॥ तत्क्षणआइ लखो नृपकाहीं। जलनहेत उद्यतमन माहीं १८७ विविध भांति राजहि समुझायो। परातिनके मन एक न आयो॥ तब स्वामी निजमानसहेरे। बिना जिये पद्मावति केरे १८८ जीवैगो यह नृपन कदाई। गोविंदगीत अष्टगति गाई॥ तात्क्षण पद्मावतिजी जागीं। उठिपतिके संग गावनलागीं १८९ सावधान नृपतबहुँ न भयऊ। स्वामि बुझाइबोध तिनकयऊ॥ कछु दिनगये ग्राम निजआये। कुण्ड बिल्वपुर शोभापाये१९० दो०। रहीं कोसअष्टादशै विष्णुपदी सुखदानि। तहांजात जयदेव नित मज्जनहित गुण खानि १९१ चौपाई। तिनकी जराअवस्थादेखी। कीन्ह शैलजा दयाविशेखी॥ एक धार तिनकुटी संमीपा। लागी बहनतिमिर जगदीपा १९२ जयदेईगंगाकरि नामा। अजहूं बहतधार सुखधामा॥ इमि जयदेव कथा सुखखानी। जियालाल द्विजकहा बखानी १९३ छन्दबरवा। तुलसिदासकी गाथा अति सुखदाइ। कहौं वरणि कैसो उर तिन पद लाइ॥ भक्तमालके कर्त्ता कियो प्रकास। बालमीकि अवतार सु तुलसीदास १९४ दो०। यामें कछु सन्देह नहिं बाणिप्रभा बलखात। राम चरित अमृत सरिस हियेमांझ चुंभिजात १९५ चौपाई। राम चरित अमृत रसधारा। पूरमानकलि कीन्ह अपारा॥ चौदह रामायाणि सुखदाई। बरणी तुलसीदास गुसाईं१९६ छन्दबरवा। बिनयपत्रिका गीतावली सुहाइ। कवितावलि दो-

हावलि सुखदमहाइ॥रामशलाका हनुमतबाहुक नाम। जानकि गिरिजा मंगल अति सुखधाम १९७ कड़का छन्दहुरोड़ा बरवा छन्द। छन्द झूलना आदिक आनंद कन्द॥ निश्चय भक्तन मुख सोहै यह बात। पढ़त नित्य रामायण जो सुखदात १९८ चौ०। निश्चय श्री रघुनन्दन स्वामी।बासकरैं ताउरजगनामी॥ कौ फल हेत पाठ कर जोई। ताको प्राप्त आशु अति होई १९९ दो०। रामशलाका मध्य में प्रश्न करै जो कोइ। होने वाली बात जो ज्ञात तुरत सो होइ २००. चौ०। तुलसी कृत रामायण जोई। ताहित काशिक पण्डित सोई॥ आदिअंत सब निरखि निदाना। निगमागम पुराणमय जाना २०१ अंगीकार सबन करि माना। कौ करि द्वेष बाद बहु ठाना॥ जब बिश्वेश्वरनाथ कृपाला। अंगीकार कीन सुरपाला २०२ तब सबको अंगकृित भयऊ। सकल सार गुनि कै लिखि दयऊ॥कान्यकुब्ज ब्राह्मणके धामा। लीन्हजन्म राजापुर ग्रामा २०३ रहो नेहदारासोंभारी। गई पितुगृह इकदिन,नारी॥ सहि नहिं सके बियोग अपारा। गे ससुरारिहि तासु पछारा २०४ ताहि देखि लज्जा अतिआई। क्रोधवन्त इमिबचन सुनाई॥ अस्थिमांसके तनहित लागी। लज्जा सकल लोक मधित्यागी २०५ है अनित्य यह देह सदाई। नित्य बिकार रहित रघुराई॥ पूरण ब्रह्म सच्चिदानंदा। अलख अगोचर आनँद कन्दा २०६ इतोनेह तिनसों किनकीजै। दोनों लोक लाभ अतिलीजै॥ इहिबिधि वचन सुनत निजतीके। उघरे हिये नयन तुलसीके २०७ उदय भयो पूरबको भागा। प्रगटो हृदयज्ञान वैरागा॥ धरि उरहरि काशीमेंआये। कीर्त्तन भजन राम मनलाये२०८नितमें हंत कच्छमें जाई।शौच शेषजल रहत सदाई॥ ताको देत एकथल डारी। रहत प्रेतलहि होत सुखारी २०९ बोलंत भयो एक दिन सोई। मांगौ वर जो इच्छा होई॥ कहो गुसांईजी सुखपाई। रघुनन्दनको देहु मिलाई २१० दो०। कहोभूत सामर्थ्य नहिं मोमें एतीतात। परसो थल

भाषतजहां आवतमारुत जात २११ चौ०। रामायण शुभ असुक स्थान। होत सुनन आवत हनुमाना॥ सब सों प्रथम कुरूप बनाई। लखि भय घृणाहोत अधिकाई २१२ सब सोंपीछे जात सदाई। यह पहिचानि गुसांई पाई॥ पीछे मारुत सुतके गयऊ। बन में जाय चरण गहि लयऊ २१३ चल सुतदीन्हे दरश सुहाये। कहे कौन हित मम ढिग आये॥ सुनि सबिनय कह तुलसीदासा। रघुनन्दन दर्शन ममआसा २१४ अनिलात्मज बोले सुख पाई। चित्रकूट मिलिहैं रघुराई॥ सुनि तुलसी अति आनंद पाये। चित्रकूट दरशन हित आये २१५ एक दिवस दर्शन इमि पाये। श्रीरघुनंदन स्वामि सुहाये॥ राजकुमार स्वरूप उदारा। सुन्दर श्याम बपुष सुकुमारा २१६ भूषण वसन अमोल विराजत। बाम दहिन कर शर धनु साजत॥ अश्व सवार महासुख राशी। तिमि सौमित्रहु प्रभा प्रकाशी २१७ एककुरंग पृष्ठ लगि धावत। निरखत महा मोद उपजावत॥ चक्षुनमूरति गई समाई। पर पहिंचानो नाहिं गुसांई २१८ तिन पीछे आये हनुमाना। पूछादरश लहो भगवाना॥ तुलसिदास बिनती करि बोले। गे द्वै राजकुमार अमोले २१९ दो०। राम लषण वेईरहे कह हनुमान सुनाइ। धरे ध्यान बिच तुलसि तब युगलरूप सुखदाइ २२० छन्द, रामगीतिका। कंतहुं इक हत्यार प्रथमहि रामनाम पुकार। बहुरि भिक्षादेहु पतितहि इबिधिबचन उचार॥ सुनत मन आश्चर्य्यकीन्हों तुलसिदास सुजान। कि बिधि यह नर भाषि रामहिं निजहि पतित बखान २२१ चौ०। ताहि शुद्धगुणि निकट बुलायो। साथ आपने अशन करायो॥ बाराणशी बुधन लखिपायो। करीसभा तुलसीहि बुलायो २२२ तिनसों बुधजन बचन सुनाये। पापिहि किबिधि अपापबनाये॥ याकोपापदूरिकिमिजाना। तुलसिदाससुनि इबिधिबखाना २२३ रामनाम इक बार उचारा। ताको का माहात्म्य बिचारा॥ देखौ शास्त्रन माहँ बिचारी। यह तौ कोटिन नाम उचारी २२४ शास्त्र

बचन बिश्वास न जोई। तौ अज्ञान दूर नहिं होई॥ यद्यपि बुधन शास्त्रको माना। पर बिश्वास न मानसआना २२५ सब मिलिकै यह बात दृढ़ाई। तुलसिदास सों कहो बुझाई॥ विश्वेश्वरबाहन है जोई। करै अदन याकर को सोई २२६ तौ हम सत्य वचन करि मानैं। कियो खदन नंदी दिय तानैं॥ पण्डित भे लज्जित सब देखी। नाम कि महिमा गुनी विशेखी २२७ दो०। श्री गुसाईं की भक्तिपर निश्चय कीन महान। नाम प्रताप अपार अति जियालाल उरआन २२८ तुलसिदास के भवन में चोरीहित इकबार। आवतभे तस्कर तहां लखो चरित्र अपार २२९ चौ०। चोरी करनचोर जहँ जावैं। गोशरधरे पुरुष लखि पावैं॥ चोरीकरन चोर नहिंपाये। निजनिज भुवन घूमि सब आये २३० तुलसिदास ढिग प्रातहिआये। विस्मित या विधि वचन सुनाये॥ महाराज वह सुन्दर श्यामा। रूप किशोर मनोहर कामा २३१ चौकीदेत रात को जोई। कहिय कौन सुन्दर वपुसोई॥ तुलसीदास सुनतयह बाता। बूड़े प्रेम भूलि सुधिगाता २३२ पुनि विचार कीन्होमनमाहीं। राखो यह सामग्रिं वृथाहीं॥ जाके हेत सहो श्रमभारी। रघुनन्दन स्वामी सुखकारी २३३ मनमें कीन्हो शोक महाई। सबधन दीन्हों तुरित लुटाई॥ चोरन लखो जबहिं यह हाला। गृह परिवार तजो तत्काला २३४ भगवत शरण भये सुखपाई। एकदिवस कर चरित महाई॥ मरोरहो इक ब्राह्मण कोई। तातिय सतीहोन हित सोई २३५ जातरही तुलसिहि किय बन्दन। कह सौभाग्यवती सुखकन्दन॥ ममपति मरोअहो सुखरासी। होनेसती जात यह दासी २३६ ममसौभाग्य कहां अब अहई। सुनत गुसाईंजी यह कहई॥ भगवद्भक्तवन्श सबहोई। सुनि तिय कीन प्रतिज्ञासोई २३७ दीन जियाइ तुलसि ततकाला। बादशाह जानो यह हाला॥ तिनको आदर सहित बुलायो। अंरयुबासन पर बैठायो २३८ करि बिनती इहि भांति

सुनाई । कछु सिद्धाई देहु दिखाई ॥ कहतुलसी कछु सिद्धिन जानौं । केवल रामनाम मनआनौं २३९ तजि श्रीरघुनन्दन पद काहीं । झूठे खेल प्रयोजन नाहीं ॥ कहो मालिक निजप्रभुहि दिखावौ । झूठेखेल न जो मनलावौ २४० यहकहि तिनहिं बन्दकरि दीन्हो । तब मारुति को सुमिरण कीन्हो॥तत्क्षण मर्कट सेन अपारा । बादशाहके क़िले मँझारा २४१ करनलाग उत्पात महाई । मानहुँ प्रलयकाल दिखराई ॥ उलटोगयो पलँग तिहि केरा । शुद्धज्ञान भयो तिहि बेरा ॥ २४२ तुलसिदास की शरणहि आयो । चरणन परि अति बिनय सुनायो ॥ अंतरध्यान भई कपि सैना । तुलसिदास बोले इमिबैना २४३ द्वितियभवन तुमलेहु बनाई । यह मन्दिर भो श्री रघुराई ॥ शहरयार तुरितहि तजि दीन्हों । काशिहिं गमन गुसाँई कीन्हों २४४ कोऊभक्तन शत्रु महाना । तुलसी हित मारण जपठाना ॥ यह बृत्तांत गुसाईं जाना । शिव हित इक पद कीन्ह बखाना २४५ ताको कियो भयो कछु नाहीं । लज्जित होत भयो मनमाहीं ॥ पुनि तुलसी वृन्दावन आये । नाभा जी सों मिलि सुख पाये २४६ भक्तमाल तिन रचना देखी। पायोमन आनन्दबिशेखी ॥ पुनिकिय दरश मदन गोपाला । तहँपायो आनंद बिशाला २४७ यह जोबात प्रकट जगआहीं । कीगुसाइँदरशनके माहीं ॥ कहो कि धनुषबाण जब धरिहौ । तब मैं दरश रावरे करिहौं २४८ सो यह मिथ्या बात सदाईं। कहते यह कब वचन गुसाईं ॥ जिन निजकृष्णावली बनायो । तामें सुयश कृष्णकर गायो २४९ जिनगुनि प्रभुजगशीश नवायो । रामायण में याबिधि गायो ॥ सियाराम मय सबजग जानी । करौंप्रणाम सुप्रेमसु बानी २५० दो० । प्रगटबात जो जगतयह ताको कारण एह । जासु उपासक जौनहै करत ताहि सोंनेह २५१ चौ० । जौन देवके मन्दिर जाई । करतइष्टको ध्यान सदाई ॥ है यह बात शास्त्र अनुकूला । सो गुसाइँ आनंद की मूला २५२ श्रीरघु-

नन्दन सुखद महाना। धनुषबाण धरको किय ध्याना॥ तिहि अनुकूल कृष्णसुखदाई। तिनको दीन्हो दरश दिखाई २५३ तिनसंग जो दरशन हित आये। तेऊ सोई रूप लखिपाये॥ तासों प्रगट बातयह सोई। और कछू कारण नहिं होई॥ २५४ कोउएक बृन्दाबन माहीं। कीन्हो प्रश्नगुसाईं पाहीं॥ की श्री कृष्णचन्द्र महराजा। पूरणब्रह्म सकल सुखसाजा २५५ बामन कोलपरश्वध धारी। रामचन्द्र नरहरि दैत्यारी॥ कच्छपमत्स्य आदि हैं जेते। तिनकी अंशकला सब तेते २५६ दो०। करत उपासन नाहिंकस उनकी अति सुखदाइ। तुलसिदास इमि बचन सुनि बोले आनंद पाइ २५७ चौ०। श्रीरघुनायक दशरथ नन्दन। अंग मनोहर आनंद कन्दन॥ अति कमनीयवयस सुकुमारा। लागि गयो मनदेखि हमारा २५८ सोनहिं छूटत अहे कदाई। अबतुव वाचापरो जनाई॥ कीकछु ईश्वरता है उनमें। तातेंअधिक धरो मैं मनमें २५९ दो०। यद्यपिशास्त्र प्रमाण से उत्तरदेन समर्थ। रहेगुसाईं नहिं दियो प्रेम भक्ति के अर्थ २६० इहिविधि तुलसीदास की कथामहा सुखसार। जियालाल द्विज भाषियो निजमति के अनुसार २६१॥

सो०। रामचरण मनलाइ संतपद्म पदरज सुमिरि। सुन्दर कथासुहाइ सूरदासकी अबकहत२६२ दो०। विष्णुस्वामीसंप्रदामाहँहोतभे सोइ।कृष्णचरित्र न विरचियो सूरसमुद्रम जोइ२६३ चौ०। सो सुनि ऐसोको जगमाहीं। प्रेममग्न होवै जोनाहीं॥ अर्थभावयुत स्वादु अपारा। भगवत प्रेम सलिल की धारा२६४ भगवत चरितकहे इहिभांती। मानहुँ लखतरहे सुखपांती॥जिन उरइविधि बिमल सुखदाई। बाहरआपु दीन झलकाई २६५ हरिके जन्म कर्मगुण गाये। ऐसे सुन्दररूप लखाये॥ की जो पढ़त सुनत हैं जोई। निश्चय बिमलबुद्धि तिहि होई २६६ दो०। महाराज श्रीकृष्ण के सखा महासुख सार। जिनको उद्धव नामरह भे तिनके अवतार २६७ छन्दरामगीतिका॥

बालचरितन माहँजिनकी रहीअति चितचाह। प्रेम अति शृंगार निष्ठासखा भाव अथाह॥ रहोतिन संकल्प हरिपद लक्षरचना हेत। पंचसप्ततिसहस रचिके गये परमानिकेत २६८ छन्दहरिगीतिका॥ रहशेष सहसपचास ताको रचतभे हरि आपहीं। निजभक्त कियसंकल्प पूरण चमत जेजन पापहीं॥ पुनि सूरश्याम कि नामसों रचिदीन भोगबनाइकै। तिहि कीन अकबर शाह पूरण पत्रतत्र मँगाइकै २६९ दो०। नामखानखाना रहो किशवरासिर्तावज़ीर। बुध्र संस्कृत भाखाविषे अरुकवि रहे गँभीर २७० चौ०। तिनपद सूर इकट्ठे कीन्हे। पदप्रति मुहर देन कहि दीन्हें॥ जो को एक सूरपद लावै। तिनके पासमुहर इक पावै २७१ मुहरलोभ सोंतब बहुलोगा। भजन बनाइ सूर धरिभोगा॥ लावन लगेभीर भै भारी। तब वज़ीर मनमाहँ विचारी २७२ एक सूरपद बांट बनायो। पद नवीन तौलन मन लायो॥ केतौ बड़ो भजन जो होई। तासु समान तुलतनहिं सोई २७३ दो०। सूरसागरहि पूर्ण किय याविधि मलिक वज़ीर। हरिचरित्र अमृत उदधि ताको पूरगँभीर २७४॥

चौ०। नंददासकी कथा सुहाई। बरणौं रामचरण मनलाई॥ विप्रबंशमें उद्भव पाये। चंद्रहासके पुत्र कहाये २७५ ग्रामरामपुर नाम बखानी। भगवद्भक्त प्रेम्र कीखानी॥ क्षणक्षण भगवतमें मन लाये। करिकविता बहु ग्रंथ बनाये २७६ रुक्मिणि मंगल पंचाध्यायी। दशमस्कंध महासुखदायी॥ अनेकार्थ अरुनाम हुमाला। दानमान लीलासुख शाला २७७ सहसन विष्णु चरण जिनगाये। जगमें भक्तिशरण दरशाये॥ अष्टछाप के भक्तसुहाये। येऊ तिनके मध्यकहाये २७८ जासु रचितहरिचरण सुहाये। ब्रजहरि सन्मुख जात सुगाये॥ मंगलरूप नाम तिन केरे। बरणौं जगमें सुखद घनेरे २७९ छंदरामगीतिका। सूरदासहु कृष्णदासहु छीतस्वामी नाम। नंददासहु व्यास जी हरिदासहू सुखधाम॥ नामपरमानंद अपर चतुर्भुजौसुखरूप।

जियालाल जहाज विष्टप जलधि परम अनूप २८० ॥
चौ०। कहौं चतुर्भुज कथा सुहाई। भक्तिपूर गंभीर महाई॥
भगवद्भक्तिम रसिक अपारा। वृंदाबन हरि भुवन मँझारा २८१
नित्यप्रति यदुनंदन आगे। नृत्यत महामोद सों पागे ॥ एक
दिवस नृत्यत अरु गावत। दोऊ करसों झांझ बजावत २८२
दो०। खुली लँगोटी तिहि समय देखि सँभारो नाहिं। झांझ
बजावत करन गुनि तालभंग मनमाहिं २८३ लोक लाज की
चिंता आई। तब श्रीहरि यह रचो उपाई ॥ अपर भुजा द्वै प्रग
टित कीन्हा। लज्जा भक्त केरि रखिलीन्हा २८४ ॥
चौ० मथुरादास कि उत्तमगाथा। बरणों नाइरामपदमाथा॥
वृद्धमानके शिष्य कहाये। भक्तिशरण में निपुण महाये २८५
नँदनंदनकर दृढ़बिश्वासा। भगवद्भक्त धर्मसुखबासा॥ प्रेमभक्ति
निजमानस लाई। रासचरित शृंगारमहाई२८६कीन्हों करतसदा
मन लाई। भगवत चरित मधुर सुखदाई ॥ दरशावन हरिसुखद
चरित्रा। भे जनुद्युमणि मयूषपवित्रा२८७दो०।आयो वृंदागहन
में साधु भेष करि कोइ। गये लोग देखन सबै चेटक जानत
सोइ २८८ शालिग्राम तासुसंग जोई। डोला करत सिंहासन
सोई ॥ शिष्यन केरि बिनय मनलाई। मथुरादास लखो तिहि
जाई २८९ चेटक बन्द भयो तिहिकाला। इनपर मूढ़ मंत्र सो
चाला॥ सोऊ उलटि ताहिके लागा। भयोमृत्यु बश तुरित अ-
भागा २९० दो०। मथुरादास जियाइयो ताको दया निधान।
जियालाल शठ सकल तजि संतचरण मनआन २९१
दो०। सुखानन्दकीकल्पना अबबरणौं सुखदाइ। दूरकरन संसार
भय आवागवन महाइ २९२ चौ० तिनकी काव्य इबिधि सुख
दाना। तंत्र शास्त्र गुरुमंत्र समाना ॥ जहँ निजनाम भोगमें
राखा। नामाच्युत सुखसागर भाखा २९३ चन्द्र सखी जिमि
बालकृष्ण धर। मीराजी गिरिधरनागरकर ॥ भगवत गुण च-
रित्र सुखदाई। कीर्त्तन भजन प्रेम मनलाई २९४ दो०। करत

भक्ति अरविन्दके सेवक सरसममान । हरिचरित्र जल मीनमन कबहुँ नाहिं बिलगान २६५ ॥

चौ० । अब श्रीभट्टकथासुखदाई । वर्णनकरौं सुमिरि रघुराई॥ राधाकृष्ण सुयश अतिनीको । सुमिरण भजन विषय रसफीको २६६ ताको दृढ़कीन्हों संसारा । भे नौसम जग जलधि मँझारा ॥ उपासना के मधुर चरित्रा । रचे युगल शत आदि पवित्रा २६७ तिनमें मधुर ललित पद जोई । द्रवी भूत सुनतै मन होई ॥ युगल किशोर रूप में लागै । त्रिष्टप भीति पलक में भागै २९८ ॥

चौ० । वर्द्धमान मंगलद्वै भ्राता । दोनौं भीष्मभट्टके ताता ॥ दोनौं भयेभक्त अतिनीके । भक्ति दृढ़ावन जगरस फीके २९९ हरिचरितन में अति मन दीन्हा । पाप रहित निर्मल जग कीन्हा ॥ हरि कीर्तन की नदी बहाई । भक्तन सों अति प्रीति सदाई ३०० निशिदिन करतभजन गिरिधारी । करतदया दीननपर भारी ॥ इहिविधि तिनकी कथासुहाई । जियालाल संक्षेपहि गाई ३०१ ॥

चौ० । कृष्णदासकी सुंदर गाथा। बरणौं नाइ रामपद माथा ॥ जिन चालक रचि आप बनाये । चंचरिछंद विष्णुपदगाये ३०२ गुरुधन चरितहु पंचाध्याई । रुक्मिणि मंगलजन सुखदाई ॥ भगवत भोजनविधि सुखपांती । रचना ग्रंथकिये इहि भांती ३०३

दो० । भगवत सन्मुख करनको भो मानहुं अवतार । आसमुद्र कीरति बिदित सुखदायक संसार ३०४ ॥

चौ० । कथा मिश्रनारायणकेरी । बरणौंसुखदायक बहुतेरी ॥ नवलाबंश प्रगटभे जोई । परमभक्त भगवत के सोई ३०५ जिनहिं बद्रिकाश्रमसुखदाई। दत्तदीनभागवतपढ़ाई। कीर्तनमेंकिहिभांति बखानौं॥ उनहीं जन्मलीन जगमानौं ३०६ जिनं ढिग भक्तनकेरे समाजा । दिनप्रति रहतमहासुखसाजा॥ नवधा भक्ति भलीविधि जाना शास्त्र तत्त्व चुनिकै उरआना। ३०७ नारद सनकादिक अरु

जियालाल करजोरिकै विनयकरत हरषात १ कश्यपतिय सुत सुवनहित हरिनरहरि वपुधार। जियालाल महिशीशधरिविनय करत बहुबार २ छन्दबरवा॥ वेषनिष्ठ यहछ्ट्ठीअति सुखखानि। वसु भक्तनकीगाथा आनँद दानि॥ रामपद्मपदरेखाध्वजको नौमि। करौं प्रणामयज्ञ अवतारज सौमि ३ दो०। बैवस्वत-आदिक नृपन पायोजिन सों ज्ञान। भयेपार जगजलधि के दारेदुःखमहान ४ चौ०॥ राखौ जानि बातसब कोई। हरिमिलने कि वेष हैं दोई॥ आंतरीय अरु बाह्य सुहाये। तिनके भेदकहौं अलगाये ५ आंतरीय हिय मांभ विचारै। सारासार पृथक करिडारै॥ तजै असार सारगहि लेवै। गहैविराग विषयतजि देवै ६ ब्रह्मलोक आदिक सुखजेते। मन क्रम बचन तजैसब तेते॥ शमदम संयम नियम सुहाये। आसन प्राणायाम कहाये ७ ध्यान धारणा प्रत्याहारा। अपर समाधि महासुख सारा॥ इड़ा पिंगला सुखमन नारी। अजबखेल लख इनहिं बिचारी ८ कमल कमल में करतबिहारा। देखै वियत चरित्र अपारा॥ बहु बाद्यन की सुनि भनकारा। होइतहांमन मत्त अपारा ९ दशप्रकार तहँ अनहद बाजै। सुनतहि शब्द जगतभय भाजै॥ मारगदेखि अँटाचढ़ि जावै। विष्टप अजिर बहुरिनहिं आवै १० रहै समीपसदा रघुराई। इहिबिधि आन्त-रीय सुखदाई॥ वेष द्वितीय वाह्यहै जोई। बरणौं सुखदायक अब सोई ११ बाहर जो देखन में आवैं। संसकार जो पंचक हावैं॥ प्रथमहिं ऊर्ध्वपुण्ड्र गुनि लीजै। तिलक ललाट मध्यजो दीजै १२ दो०। हरिआयुध मुद्राद्वितिय शंखचक्र हैं जोइ। तिन चिह्नको धारिबो है शरीर पर सोइ १३ चौ०॥ माला-तृतिय चतूरथमंत्रा। पंचमनाम बिचार स्वतंत्रा॥ संसकारइहि भांति सुहाये। पद्मपुराण आदिकन गाये १४ हारीतस्मृति कान बिचारा। स्मृतिपराशर आदि पुकारा॥ वेदस्मृति मारग दरशावें। बड़भागी नरयामगआवें १५ वेष महात्म्य कहौं कि-

मिगाई। भगवत मिलन मार्ग सुखदाई॥ पद्मपुराण कहत इ-
मिगाई। जिनगलतुलसी माल सुहाई १६ कमल माल अथ
वा सुखसाजै। भगवत शस्त्र चिह्न भुजराजै॥ तिलक ललाट
महाद्युति धारी।असवैष्णवविष्टपशुचिकारी१७आगम सारतंत्रइ-
मिभाषत। जो केवल माला गलराखत॥ अस वैष्णवनानासुख
कूजित। ब्रह्माआदिकहूसों पूजित १८ तंत्रशास्त्र पुनि वचन
उचारत। मालातिलक शस्त्र जो धारत॥ यद्यपि वह चांडालहु
होई। पूजनीय तबहूंहै सोई १९ भारत भीष्म पर्व कह सोई। ब्र-
ह्मक्षत्रि विटशूद्रहुजोई॥ वैष्णवभेषधरैनिज देहा। पूजनीय सो
निस्सन्देहा २० शतनसहस्रन इमिअश्लोका। भाषतवेष महा-
त्म्यअशोका॥ विनावेषनहिं मगउद्धारा। कसनहिं महिमाहोइ
अपारा २१ संसकार बिन गुरु उपदेशा। कोउन पावत सुखल
वलेशा॥ ऊपर वेष किये बिनुभाई। भीतरज्ञान न होइकदाई
२२ सिद्धिअनेक जन्मकीआवै। तबयह जीवपरम पदपावै॥
एकहि बारकहै जो कोई। तो कदापि प्रापत नहिंहोई २३ ऊपर
वेष प्रथम जबकरई। जपतप भजन नेम ब्रतधरई॥ सहसन
जन्म परिश्रम लावै। तबयह मन उज्ज्वलता पावै २४ पारस
आय सहाटक कारक। तिमिकर वेष अमलमुद धारक॥ तुल
सी हरिआयुध सतसंगा। अवशिहोइ यह निर्मल अंगा २५
है सतसंग महात्म्य अपारा। सो प्रथमहिंमैं कीन उचारा॥पुनि
यह वेष स्वामि दरशावै। बिनाचिह्न काको कहवावै २६॥
जिमि शिवमन्दिर परतिरशूला। चक्रबिष्णु मन्दिर सुखमूला॥
देखि भवन हरहरिमन आवै। तिमि जिहिवेषतासु कहवावै॥
जानाजाइ कुटकध्वज देखी। चपरासी चपरास बिशेखी॥तिमि
जिहि वेषतासु है सोई। यामें कछु सन्देह न होई २८ एकबात
सुमिरण इतआई। सो मैं अंबवर्णत सुखदाई॥ कोउनृप धरमात
माकि राजी। रहकालूकहारसुल साजी २९ पकरन मीनगयो
इकबारा। पकरत आवत लखोभुवारा॥ दीन्हो जाल फेंकि

जलमाहीं। निजप्राणन भयभीत तहाँहीं ३० लीन्हो मृतिका तिलक लगाई। जालकि दानामाल बनाई। साधुरूप सोबैठो जहँवां। राजाआइ लखत भे तहँवां ३१ दण्डप्रणाम साधुगुनि कीन्हो। आगे कछुक भेंटधरि दीन्हो॥ गयोनृपति निजमंदिर काहीं। कालूभे हरिशरणतहाँहीं ३२ गृह परिवार तुरिततजि दीन्हो। मनलगाइ हरिचरणन दीन्हो॥ पुनिमन में अति आनंद पाये। यह दोहा तिहिठांव बनाये ३३ दो०। बाना बड़ो दयालको तिलक छाप अरु माल। यम डरपै कालू कहै भय मानी भूपाल ३४ चौ०॥ ताते प्रथमपञ्च संस्कारा। हरिप्रिय धारियं वेष उदारा॥ ऊरध्व-पुण्ड्र तिलकहै जोई। भगवत चरण कहावत सोई ३५ हैं कछु तासु परस्पर भेदा। सो मैं वर्णत जो कह वेदा॥ श्रीसम्प्रदा रीति सुखदाई। भगवत पद आकार बनाई ३६ सिंहासन भ्रूमध्य बनावत। मध्यज्योति सम रेख लगावत॥ रोलि पीत वा अरुण लगावै। हरिप्रिय श्रीतिहि नाम कहावै३७श्रीलगाइबे को यह कारण। की अनुक्षणश्रीपद जग तारण॥ तजत न संग सदा कर सेवा। माध्व सम्प्रदा को यह भेवा ३८ सूक्ष्मरेख द्वै ऊर्ध्व लगावत। भ्रूअध सिंहासनहि बनावत॥ सिंहासन अधनासाताई। फल कटार आकार लगाई ३९ अब निम्बार्क सम्प्रदा गावत। सूक्ष्मरेख द्वैऊर्ध्व लगावत॥ मध्यमविन्दी श्याम बनावत। वा पुष्कल तिहि कमल बतावत ४० सूक्ष्महि सिंहासनहुँ बनावत। अब विष्णुस्वामी को गावत॥ सूक्ष्मरेख द्वै अध सिंहासन। मध्यशून्य नहिं कछु तिहि आसन ४१ चारि सम्प्रदा जो संन्यासी। नाम त्रिदण्डी तासु प्रकासी॥ एक पलाश दण्ड कर राखत। दोसर दण्ड शिखा अभिलाषत ४२ तृतिय यज्ञ उपवीत सुहावै। इमि मारग संन्यास कहावै॥ गिरि अरु पुरी तीर्थ मुनि नामा। गेरु सिंदुर की वस्त्र ललामा ४३ स्मार्त्त सम्प्रदा कहौं बिचारी। चारौं सम्प्रदान सों न्यारी॥ शंकरस्वाम्या चारय तामें। तिलकरीतिया

विधिहै जामें ४४ की त्रिपुण्ड्र बट पत्र समाना। चन्दन भस्म तीर्थरज आना॥हैं संन्यास रीति इमियामें। शिखासूत्ररास्वतनहिं जामें ४५ दण्डकाष्ठइक करमेंराखत। दश विधिनाम जासुमें भाषत॥ शंकर स्वामि कि कथा मगाये। गेरुसिंदुरकी बस्त्रसुहाये ४६ श्रीरघुनन्दन स्वामि कृपाला। हरिहौ कबहुँ जगतदुखजाला॥ कबहूँ रावरि शरणम ऐहौं। प्रभुको जनजग मांझकहैहौं४७युगल किशोर रूपसुखकारी। कोटिन रति रतिपति छबिहारी॥ भूषण वसन विविधतन सोहैं। देखत रूप चराचर मोहैं ४८ दो०। मन चकोर शशि छबिबसै केकीघन जिहिरीति। श्रीरघुबर तव पद कमल तथा रहै. ममप्रीति ४६ यानिष्ठाम भये हैं जोई। बर्णन करत कछुक मैंसोई॥ प्रथमहिं अवर सखान कि गाथा। बरणौं नाइ रामपद माथा.५० भये भक्त भगवत के जोई। प्रथमहि मुसलमान रह सोई॥ चलत रहेनिज मारग माहीं। पीर विना कछुजानत नाहीं ५१ एक समय बृन्दावन आये। उगेपुण्य बहु जन्म सुहाये॥ दरशन तहां कृष्ण के पाई। तबतन दशा और कछुआई ५२ सुन्दर रूप विलोकि सुहायो। मोहित गिरोभूमि मुरझायो॥ उनकी पीर पीर नहिं जानो। मूर्च्छा आई यह मन आनो ५३ कीनपुकार चक्षु तब खोले। पुनि रसखान वचन इमि बोले॥ खोलौं नेत्र कवन विधितेरे। वह मूरति समान उरमेरे ५४ भे सब विघ्नकेर निधाना। बहुरिपीर इहि भांति बखाना॥ काबेकाहँ चलो सुखपाई। तबबोले रसखान सुनाई ५५ मैं गो ब्रजके हाथ बिकाई। सो तजि अनत नकछू लखाई॥ हौंजु उपल तौ गिरपतिकेरा। मनुज जोग्वाल कृष्णकर चेरा५६पशुजु नन्दधेनुन बिचचरऊं।ब्रजवृक्षन पक्षीतनु धरऊं॥ चहो पीर रथपर लैजाहीं। भाजि छिपे बृन्दाबन माहीं ५७ इहि बिधि किय बृन्दाबन बासा। सहसन कवित रचे सहुलासा॥ जिनहिं सुनत हरिजन मन लोभा। कथन प्रिया प्रीतमकी शोभा ५८ बिबिध बिहारकहे जिन माहीं। सुनतहिं

हरिजन मन चुभिजाहीं ॥ वैष्णवि भेष सदा रह कीन्हे । माला बहुत रहत उर पैन्हे ५९ पूंछत भयो कोउ इकबारा । किहिहित माला पहिन अपारा ॥ सुनत वचन रसखान उचारा । करतमाल भवसागर पारा ६० जो छोटेपत्थर जगमाहीं । तिनहिं माल चहिये बहुनाहीं ॥ मैं हौं भारी शिला समाना । ताते अमितमाल उर आना ६१ दो० । इबिधि कथा रसखानकी जगत जनन सुखकार । जियालाल संक्षेपही बरणीमति अनुसार ६२ ॥

चौ० ॥ अब भगवान दासकी गाथा । कहौंनाइ हरि जनपद माथा ॥ मथुरा में मन्दिर सुखकारी । भगवद्भजनभाव दृढ़भारी ६३ अति गुणज्ञ हरियशके प्रेमी । हरि मन्दिर मार्जनमें नेमी ॥ सुखद रहस्यरसज्ञ निदाना । हरिभक्तन विश्वासमहाना ६४ सुन्दर वपु अति बुद्धि निकेता । तहँ शालार परीक्षा हेता ॥ डौंड़ी इमि दीन्हो फ़िरवाई । ताको शीशलेउँ कटवाई ६५ जोकोउ तिलक मालतन धारी । सुनिबहु लोगन वेष उतारी ॥ नहिं भगवान दास भयमाना । अति आनन्दहिये निजआना ६६ सुन्दर तिलक ललाटम करिकै । दाम निवीत धारि मुद भरिकै ॥ बादशाहके सन्मुख गयऊ । देखत मलिक कहन इमिलयऊ ६७ आज्ञा उल्लंघन किमि कीन्हो । सुनत वचन इमि उत्तर दीन्हो ॥ हमरे दीनमहै यह बाता । तिलक मालयुत प्राणजुजाता ६८ तौ उद्धार जगत सों होई । जानाहम बेलायह सोई ॥ ताते तिलक माल शुचिधारा । विना परिश्रमहै उद्धारा ६९ बादशाह लखिदृढ़ विश्वासा । है प्रसन्न यह वचन प्रकासा ॥ इच्छाहोइतौन अबलीजै । जोमांगौ तुमको हमदीजै ७० कह भगवानदास सतिभांऊ । कबहुँन मथुराबाहरजाऊं ॥ बादशाह लिखिवचन उचारा । मनचाहै जब लगे तुमारा ७१ करौ आमिली मथुराकेरी । याविधिकीन्ही कृपाघनेरी ॥ तिनबहु दिवस आमिली कीन्हा । राधाकृष्णचरणचितदीन्हा ७२ दो० । मंदिर श्रीहरदेवको मानासिगंगा नाम । श्री गोबर्द्धन पोखरा बनवायो सुखधाम ७३ चौ० ॥

कथा चतुर्भुज नृपति सुहाई। वरणौं रामचरण शिरनाई॥ भगव
द्रक्त साधुसेवी अति। भगवतचरणन मेंलागी मति ७४ जासु
समान द्वितिय नहिं कोई। आवत भक्तसुनै जब सोई॥ ताको
लेन इविधि सोधावें। जिमिसेवक स्वामी पहँ जावें ७५ करि
विनती ताको घरलावें। चरण धोइ आसन बैठावें॥ रानी सहि-
त करें नृपपूजा। भगवत समगुनि भेदन दूजा ७६ पुरचहु दिशि
योजन परमाना। चौकीराखी नृपति सुजाना॥ माला धारी
जो कोउ आवें। तिनके समाचार पहुँचावें ७७ कोउ दोसर नृप
सुनि यह हाला। इहि विधि कहो वचन तत्काला॥ योग अयोग
समझ नहिं जोई। तौ नहिं भक्ति बड़ाई होई ७८ तब तिहि प-
ण्डित कह तिहि पाहीं। समुझिलेत है हैं मन माहीं॥ तब राजा
इकभाट बुलायो। लेन परीक्षा हेत पठायो ७९ तिहि बुझाइ बो-
ले पुनिराऊ। माला तिलक धारिकै जाऊ॥ बनिकै जाउ स्वामि
हरिदासा। लेउ परीक्षा नृप के पासा ८० सुनत भाट तत्क्षण
तहँ आयो। भटई रीति तहां फैलायो॥ नृप रहँ जान कठिन क-
रिजाना। निजनृप शीष तबहिं उरआना ८१ धरिस्वै रूप चलो
नृपपाहीं। द्वारपाल रोंकोतिहि नाहीं॥ गयो नृपति के संमुख
जबहीं। राजा किय आदर बहुत बहीं ८२ पुनिभगवत परसाद
जिमायो। भगवंत चरचा कछुक चलायो॥ ह्वांहां करत रहो सो
ताहां। राजा जानि लियो मन माहां ८३ राजा निज मन में
गुनिपायो। लेन परीक्षा कोउ पठायो॥ भग्न वराटिकाका सम्पु
ट धरि। ऊपर तिहि बहुभांति रचित करि ८४ सम्पुटयुत तिहि
दीन बिदाई। चलोभाट मन आनन्द पाई॥ अपने नृपति पास
सो आयो। भक्ति चतुर्भुज नृपकी गायो ८५ पुनिसह सम्पुट
धरी बिदाई। राजा के आगे सुखपाई॥ तबनृप सम्पुट खोलि
सुहावा। देखो कछू भेद नहिं पावा ८६ तब पण्डित राजहि समु-
झायो। भेदंचतुर्भुज नृपसब पायो॥ है तनभीतर में यह तुच्छा।
ऊपर शेष कियो अति स्वच्छा ८७ की यह भाट भक्ति उरनाहीं

यहै अर्थ इहि सम्पुट माहीं ॥ सुनत नृपति अति लज्जा पायो। तिन पण्डित को तहां पठायो ८८ पण्डित चले चतुर्भुज पासा। आनन्द मगन महासुख बासा ॥ पण्डित आवत सुनि नृपराई। आगे मिलि घरगये लवाई ८९ बहुत दिवस कीन्हो सतसंगा। सुखपायो द्वौ जनन अभंगा ॥ पण्डित चलन कि इच्छा कीन्हा। तब भण्डार खोलि नृप दीन्हा ९० पुनि कह जो इच्छा सो लीजै। पण्डित कह मैना ममदीजै ॥ मैनापच्छी नृपहि पियारा। ताको देत न लाये बारा ९१ पण्डित मैना पाइ सिधाये। निज राजा कि सभा चलि आये ॥ मैना नृपकी सभा निहारी। भगवत बिमुख बैठ सबझारी ९२ तब तिनसों इमि बचन उचारा। राम राम किन करत पुकारा ॥ जिमि होवैतुम्हार उद्धारा। इहि जग सार न सकल असारा ९३ रामभजन बिन नहिं उद्धारा। वेद पुराण सकल श्रुतिसारा ॥ तब पण्डित सों कह नरराई। कहो चतुर्भुज कथा सुनाई ९४ नृपसों पंडित कहा बखानी। या मैना सों लीजै जानी ॥ कोटिन मुख सों सकत न गाई ॥ नृपति चतुर्भुज भक्ति महाई ९५ सुनि इमि भयो नृपहि बिश्वासा। तजि जगजाल भयो हरिदासा ॥ भाव भक्ति नृप गयो दृढ़ाई। मैना बहुरि नृपति पहँआई ९६ दो० । सुनत चतुर्भुज नृपति इमि मन सुख लहो महान। जियालाल शठ सकल तजि हरि चरणन मन आन ९७ ॥

सो० ॥ एक नृपति की गाथ अत्युत्तम सुख दानि जग। नाइ रामपद माथ सोई अब बर्णन करौं ९८ दो० । जिनजग सुख ऐश्वर्य्य को गुनि अनित्य सबकाल। सदा भजन सुमिरण करत सियपति दशरथलाल ९९ चौपाई ॥ कण्ठी तिलक जासु तन देखत। भगवतरूप तासु मन लेखत॥करत दण्डवत बिबिधि प्रकारा। पूजा करत महासुखसारा १०० जो कछु धन निजकर में पावैं। हरिजन हरि उत्साह लगावैं ॥ भांड़ आदि हरिबिमुख जुकोई। तहवां नहिं पावतकछु सोई १०१ भांड़न मिलि यह

मंत्र दृढ़ायो। सबहुन साधू भेषबनायो ॥ जुरिमिलि कै राजा ढिग गयऊ। लखिनृप पूजन बन्दन कयऊ १०२ तब भांड़न मिलि साज बनाये। रागकुतूहलादि मनलाये ॥ है प्रसन्नराजा तब बोले। धन्य धन्य हरिभक्त अमोले १०३ नाचगान करि ढोल बजाई। सेवक करत कृतार्थ सहाई ॥ इमि आदरयुत अशन करायो। भरिकै मुहरथार धरवायो १०४ बिदा समय तिनको दै दीन्हो। भांड़न अति अचरज मनकीन्हो ॥ भक्तन में लखि दृढ़ बिश्वासा। भांड़न उर अनुराग प्रकासा १०५ दो०। केवलनृप सतसंग ते गोभांड़न को राग। जियालाल शठ बिषय तजि रामचरण में लाग १०६॥

चौ० ॥ गिरिधर ग्वाल कथा अबभाखौं। रामचरण निज मानस राखौं ॥ गिरिधर ग्वाल महासुख खानी। सखाभाव हरि में निज आनी १०७ अनुक्षण भगवत के ढिग जाई। हँसी खेल में रहत सदाई ॥ सदा प्रेमनिज रहत छिपाये। जिमि शिखि अन्तर दारु दुराये १०८ हरिचरित्र कीर्त्तन मनलावैं। गद्गद बचन शिथिल ह्वै जावैं। जानैं प्रीति न छिपत छिपाई। कीर्त्तन नृत्य करैं वनजाई १०९ एकं समय अति आनँद पायो। भगवत रास चरित्र करायो। मग्न प्रेमरस में अति भयऊ ॥सब धन हरि अर्पण करिदयऊ ११० प्रीति रही इमि भक्तन माहीं। मोसन कहत बनत सो नाहीं ॥ साधु भेषजो कोऊ देखत। भगवत रूप ताहि करि लेखत १११ मैरो साधुइक देखतभयऊ। ताहू को चरणोदक लयऊ ॥ और ब्राह्मणन इंहि विधि देखी। वारण किय अयोग्य यह लेखी ११२ तिनकें बचन श्रवण नहिं कीन्हा। या बिधि ते प्रत्युत्तर दीन्हा ॥ मृत्युहोति भक्तन कीनाहीं। यह बिश्वासन तुमउर माहीं ११३ दो० ताते जानत मृतकहौ येहैं सदा अनाश। या बिधि गिरिधर ग्वालउर भगवद्भक्ति प्रकाश ११४॥

दो०। संत चरण शिरनाइकै तिन पदरज मनलाइ। लाला-

चारय की कथा बरणौं शुभ सुखदाइ ११५ चौ० । स्वामी रामा-
नुज कि जमाती । भगवद्भक्त भये इहि भांती ॥ जिनकी कथा
सुनत सुखदायनि । निश्चय प्रीति होइहरि पायनि ११६ तिन
गुरुदिय आज्ञा इहिरीती । कीजो हरिभक्तन अति प्रीती ॥ बड़े
भ्रातृ सो न्यूनन जानब । अहनिशि याबिधि निजमन आनब
११७ चलत सदा ताही अनुकूला । एकसमय अति मंगल
मूला ॥ तिलक मालतन अति सुखदाई । तटिनी पूरवेग शव
जाई ११८ तिहि आकर्षिधिषण निजलाये । सुन्दर सुभग वि-
मान बनाये ॥ तापर धारि करत हरिगाना । दीपवती तटकीन
पयाना ११९ दाह क्रिया कीनी तहँ जाई । बहुरि तिलक दीन्हो
सुखपाई ॥ करिमज्जन निज मन्दिर आये । ता उत्सव द्विज-
गोत्रि बुलाये १२० नाहिं निमंत्रण विप्रनमाना । याबिधि कीन्हों
बचन बखाना ॥ इनको कोउ रहो नहिं एहा । ना जानैं किहि
जाति कि देहा १२१ लालाचार्य्य सुनत इमिभयऊ । चिन्ता
करत गुरूपहँ गयऊ ॥ वे लिवाय रामानुज पासा । जाइकीन
सब हाल प्रकासा १२२ स्वामी रामानुज कह एहा । करौ न कुछ
मन में सन्देहा ॥ नहिं वें लोग निमंत्रण मानत । हरिप्रसाद
महिमा नहिं जानत १२३ दो० । भोजनकी सामग्रि तुम सकल
बनावो जाइ । हरिपार्षद बैकुण्ठसों भोजन करिहैं आइ १२४
चौ० । यह सुनि सामा खदन बनाये । तिहि अवसर पार्षदगण
आये ॥ सुन्दररूप अनूपम सोहैं । शोभादेखि जन्तु मन मोहैं
१२५ सुभग निबीत बनसृज धारे । चारिभुजा सोहत सुखकारे ॥
गदा चक्र दरवारिज धारी । तड़िताम्बर मोहांध बिदारी १२६
विष्णु समान सकल गुण भीने । केवल इक भृगुचरण बिहीने ॥
लालाचार्य्य दण्डवत कीन्हो । चरणधोय चरणोदक लीन्हो १२७
बहुरि शुभासनपर बैठाये । रुचिसमेत भोजन करवाये ॥ ब्राह्मण
लखि मन अचरज लाये । ऐसे विप्र कहांके आये १२८ पुनि
कुमंत्र मन में ठहराये । सब मिलिकै यह बात दृढ़ाये ॥ भोज-

नकरि घूमैं जब सोई। हँसीकरौ इमि लज्जित होई १२९ जानि
गये हरि पार्षदतत्रा। जो मन में उन कीन कुमंत्रा॥ सो आ-
काश मार्ग है गयऊ। लखि चरित्र द्विज लज्जित भयऊ १३०
दो०। त्यागि मान लज्जित बदन नीचे नैन नवाइ। लालाचार्य
समीपगे बचनकहो नहिं जाइ १३१ चौ०जहां पार्षदन भोजन
कीन्हो। सो पत्तल उठाय पुनि लीन्हो॥ सीथ प्रसाद रहो तहँ
जोई। भोजनकरत भये सब सोई १३२ लालाचार्य्य शरण पुनि
आये। करि दण्डवत बिनय बहुगाये॥ अब सेवक निज हमको
करिये। और कछू चितमें नहिं धरिये १३३ कह लालाचारज
तिन पाहीं।भगवत कृपा भई तुम माहीं। पाये दरश पार्षदनकेरे॥
चाहत काह अधिक तिहि तेरे १३४ पुनि ब्राह्मणन बिनय बहु
कयऊ। अरु इमि बचन उचारत भयऊ॥ अब हमको लज्जित
नहिं कीजैं। शरण चरण अपने की दीजै १३५ या विधि सब
हरि शरणहि आये। भगवत चरणन में मन लाये॥ इमि हरि
भक्ति भेष परतापा। सब संसार माहँ अति व्यापा १३६॥

चौ०। मधुकरसाह कथा अब गावत। सन्तपद्मपद शीश
नवावत॥ मानस भगवद्भक्ति प्रकासा। साधु भेष में अति बि-
श्वासा १३७ नाम समान रहे गुण जाही। होत षडंघ्रि सुसार-
ग्राही॥ तिमि सारग्राही रहसोई। तिलक मालयुत देखैं कोई१३८
परिक्रमा करि शीश नवावैं। चरणधोइ चरणामृत पावैं॥ यह
आचरण नृपति जो लावैं॥ बन्धु कुटुम्बिनको नहिं भावैं १३९
गर्धभ एक पकरि ते लाये। करिशिर तिलक माल पहिराये॥
महल नृपति मधुकरकि पठायो। राजा साधु भेष लखिपायो १४०
उठिकै झटितहि चरणपखारे। परिक्रमाकरि बचन उचारे॥ आजु
निहाल हमहिं करि दीन्हो। अशनकराइ बिदा पुनि कीन्हो १४१
दुष्टनके लज्जा मत आई। बिश्वासहु प्रकटो उरआई॥ करन
निहाल कहो नृपबानी। ताको अर्थ लेहु यह जानी १४२
दो०। धन्यभाग मेरेभये जो गर्धभ ममसज। तिलक माल

धारण किये जो साधुन के साज १४३ तिलक माल जे धरन तन ते गर्धभ ते नीच। रहत विषय मल मलिननित ज्यों जल निर्गम कीच १४४॥

चौ०। हंस प्रसंग कथा अति नीकी। बरणौं नाक भक्ति युवतीकी॥ कुष्ठीरहो कतहुँ इकराजा। बहु औषधकिय भिषक समाजा १४५ रोग नृपतिकर नाहिंनशाना। एकवैद्य तबइबिधि बखाना॥जाइ हंस कोऊलै आवै।तौ यहतत्क्षण रोगनशावै १४६॥ सुनिनृपव्याध समीप बुलाये। हंसगहन हिततुरित पठाये॥ पहुंचे मान सरोवरजाई।मिलन हंसकिय विविध उपाई १४७ तब साधुनकर भेष बनाये। पकरन हेत हंस ढिगआये॥ हंसन यदपि कपट यहजाना। परलखि साधुभेष सुखसाना १४८ आपन भागव निंद्यविचारी। बंधनतर आये तिहिवारी॥ बांधि ब्याध राजा ढिग्लाये। वैद्यरूप धरिहरि तहँआये १४९ छन्द रामगीतिका। भक्तवत्सल दीनबंधु विचारियह मनमाहिं। हंस वध होतहिरहै मरयाद भेषकिनाहिं॥ पन्नमहँ निजभेषजी विस्तार कीन्होआइ। सुनतनृप वृत्तांत लीन्ही तुरित निकटबुलाइ १५० दो०। त्रिजगद्को वर्णनकियो पुनिजिमि हंसमँगाव। कहोवैद्य आमयनशिहि नृपजनि शंकालाव १५१ चौ०। देहुछोड़ि इन हंसनकाहीं। बंधनसों कछुकारज नाहीं॥ दिय लगाइ औषध कहिएहा। होतभई द्रुतनिर्मल देहा १५२ अविलम्बित नृपहंस छुड़ायो। हाथजोरि इमिवचन सुनायो॥ अहो वैद्य नृपयह ममधामा। राष्ट्रकोस अरु कटक ललामा १५३ सो सब आपुकेर यह अहई। सुनि नृप वचन वैद्य इमि कहई॥ सब हमार है निस्सन्देहा। परमम वचन सुनौ अब एहा १५४ भगवद्भक्ति धरौ मनमाहीं। साधूसेवा करौ सदाहीं॥ मिली कठिन ताते नर देहा। ताते सुफल करौ तुम एहा १५५ यह संसार अमान असारा। केवल राम नाम तहँ सारा॥ ताको भजन अहरनिश कीजै। अहं त्वां मन सों तजि दीजै १५६

इमिसमुझाइ बिदा हरिभयऊ। राजा सोइ आचरण कयऊ ॥ यहजो हंस प्रसंग सुहावा। समुझन योग्य सुजन मनभावा १५७ निष्ठाभेष द्विजन इहिभांती। नहिं जिन मनुजन किमि कहिजाती ॥ ज्ञानी कहवावत जगजेई। जीवत बृथा भक्ति बिन तेई १५८ दो०। जियालाल बानाकिये नामहोत मजबूत। किहि कहवावैं भेष बिन ज्यों गणिकाके पूत १५९ ॥

इतिश्रीभगवद्भक्ताऽनुरागदायकजियालालजन्माग्रेणविरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठामध्येषष्ठाभेषनिष्ठायामष्टभक्तकथा वर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौअष्टमस्तरंगः ८ ॥

दो०। अन्तकभ्राता पितुसुता पुनि ताको जो स्वामि। जियालाल वसुपाद जिहि सोदैकरत नमामि १ अर्जुन पितु तनुजापती तापितु तनुजा स्वामि। जियालाल तिहिसुत सुवन ताखो ताहिंनमामि २ छन्दबरवा। निष्ठासप्तम महिमा गुरु सुख दाइ। कथारुद्र भक्तनकी कहौं बुझाइ ॥ रामकमल पदरेखागो पदनौमि। करि प्रणाम अवतारहि पृथुपुरु सौमि ३ प्रगट अवधपुर माहीं जो सुखधाम। धर्मलीक प्रगटाई नई ललाम॥करि समान भूभेषज सर्वनिकाल। जियालाल द्विज धारततिन पद भाल४चौ०।कहत शास्त्र इहिभांति सुनाई।तीनिप्रकार गुरू सुखदाई ॥ प्रथम जनेता पुनि उपनेता। तृतियगुरू हरिमंत्र जुदेता॥ ५ भगवद्धर्म बहुरि समुझावै। हरिपदाब्ज सूरति उपजावै ॥ हियेमोह तमदेइ भगाई। ज्ञानारुण उरदेइ जगाई ६ जागत कामादिकखलचोरा। भागन पाव मोहतममठौरा ॥ निर्मलभयो हृदय चणमाहीं। गुरूकृपाते अचरज नाहीं ७ युवती गुरु विशेष पतितासू। ईश समान करै विश्वासू॥ यद्यपि सबकी लीक समाना। महिमा सबसमान करिजाना ८ परइहि निष्ठामें है सोई। भगवंत मिलन हेतहै जोई॥ सो यह जानहु बात सुहाई। वेदपुराण कहत सबगाई ९ भेदगुरू भगवतमेंनाहीं। यहविचारिलीजै मनमाहीं ॥ कहो भागवत महँ यदुराई। गुरुजानौ मम

नाहीं। अति अभिमान किये मनमाहीं ॥ यद्यपि गुरुसमान सबअहईं। किंचित भेद वरणिसो कहईं २५ एकमकान अधिक अँधियारा। धरो तहां तिलगर्त्त मँझारा॥ एकगुरू निज शिष्य पठायो। तिल ढूंढ़िबेहेत सुखआयो २६ धरो भुवन भीतर तिल होई। जानत गुरु शिष्यहि कहसोई ॥ सो ढूंढ़त बहुकाल बितायो । मन्दिरमांझन वह तिलपायो २७ दोसर गुरु निज शिष्य बुलाई। तिल ढूंढ़नहित दीनपठाई ॥ तासों यहिविधि दियो बताई। है जिहिओर सुतिल सुखदाई २८ ढूंढ़नलागसु अति सुखपाई। मिलो मिलो नहिं फिरो मँझाई ॥ तृतियगुरू निज शिष्य बुलायो। गृहतिल अलँग सगर्त्त बतायो २९ चलो शिष्य सो अति सुखपाई । पायोसो तिलगर्त्तम जाई ॥ यहि प्रकारके गुरूअनूपा । जानो सुजनभेद यहरूपा ३० भक्ति दृढ़ावन गुरू सुहायो। सोई गुरु ईश्वर समगायो॥ जबलग निज मारगन लहीजे । तबलग गुरुकरिकै गुरुकीजै ३१ दत्तात्रय चौबिस गुरुकीन्हा। भलीभांति निजपथ लखिलीन्हा ॥ सोई गुरु हरिमग दरशावै ।.कानफूंकि नहिं गुरुकहावै ३२ यथा भागवत भाषत सोई । सो गुरुसोंन स्वजन जगहोई ॥ मातु पिता सुर स्वामिन सोई । यहि जगसोंन छुड़ावत जोई ३३ गुरू शिष्य यदि धर्मअपारा। भाषत शास्त्र विविध परकारा ॥ चारधर्म पुनि चहिय विशेषी । गुरुके चार शिष्यके लेषी ३४ भगवद्भक्त शास्त्रकोज्ञाता। समदरशी श्रुतिपथ मनुराता ॥ अरु यहिभांति लिखो सबठामा । गुरु अज्ञानैहरण सुखधामा ३५ तौ गुरुको यह वाजिबहोई। शिष्यहि पंथ देखावै सोई ॥ जिहि मगसों श्रीहरिको जानै। छलबलछाँड़ि प्रेम प्रणठानै ३६ पुनि शिष्यहुके धर्मसुहाये । चारि चारुवरणौं मनभाये ॥ तनमन सेवा गुरुकी करई। दुखसुख स्वाद दूरि परिहरई ३७ सकलगर्व गुरु सन्मुखत्यागै। गुरु विश्वास हियेमहँ जागै ॥ वेदश्रुती करत इमिगाना। कीजो हरि गुरुसम करिजाना ३८ सकलमनो-

रथ पूजें तासू । दृढ़विश्वास अहै इमि जासू ॥ पुनि गुरुसेवा इमि अनुसरई। अज्ञानी जिमि निज बपुकरई ३९ आदि महा-भारतमें गाई । तापसधूम ऋषीश महाई ॥ चारि शिष्य तिन के मनभाये । गुरु बिश्वासहिये उपजाये ४० सेवा करतभये मनलाई । गुरुप्रसाद सब विद्यापाई ॥ करै इविधि सन्देहजु कोई। बिनश्रम विद्या किहिविधि होई ४१ तौ यह दृढ़जानौ मनमाहीं । भगवतरूप गुने गुरुकाहीं ॥ तासों हरि गुरुद्वारा करिकै। विद्यादियो सकल मुदभरिकै ४२ पुनि गुरुहैं समरत्थ सदाई। व्याघ्रधेनु पीवत इकठाई । ऐसे गुरुवांछित पदजोई ॥ क्षणभीतर मलखावतसोई ४३ भयो होत इहिभांति सदाहीं। यामें कछु अयुक्तहै नाहीं ॥ की निर्मलजल सुन्दर जोई। करैं निरामय बाससमोई ४४ तैसे सिद्ध गुरु हैं जिनके। धोइगये सबपातक तिनके॥ पर इहिसमय गुरू इहिभांती । थोरे थोरे जगत लखाती ४५ दीन्हो कानम मंत्रसुनाई । लीन्हो चेला ठीकबनाई । छठेमास वा बरहेंमासा ॥ तिहि घरपहुंचैं सहित हुलासा ४६ लेइँभेंट तहँ हर्षितगाता। इतनोई चेलासो नाता॥ चेलाचहै नरकमें जावै। चाहैं विधिवश स्वर्ग सिधावै ४७.चेला के मन कछु सन्देहा। पूछैं तिनसों सहित सनेहा॥उत्तरदेव रहो अतिदूरी। बोले इविधि क्रोधसों पूरी ४८ सबलोंगनसों कहनसु लागे। देखो यह पूंछत ममआगे॥ नास्तिक उलटि ताहि बत-लायो। बेबिश्वास बहुरि ठहरायो ४९ सबसों कहत फिरत इहि भांती। कथनि कथत वह अवगुण पांती॥है इहिभांति गुरुनकी रीती।अब बरणौं चेलनकी प्रीती ५० नहिंपूछत गुरुसों उपदेशा। मंत्र जपनमें नाहिं प्रवेशा ॥ इक दो वरष बादि गुरुआये। तिन-हिंदेखि मनमें दुखपाये ५१ की द्वै चार रोज इत रहिहैं । नीके नीके भोजन लहिहैं ॥ लेइँ बिदाई चलतकि बारा । इहिविधि मनमों करत विचारा ५२ गुरुशिष्यनके इविधि हवाला। वरणि किसकों हाल कलिकाला ॥ हैं इहिजगमहँ गुरु बहुतेरे । बन्द

नयन पर चेलनकेरे ५३ यदि परलोक होइभय तिनके। भगव-द्भक्ति उगै उर जिनके॥ ढूंढैंगुरुते मन चितलाई। मिलैंगुरू हरि होइँ सहाई ५४ पुत्रकलत्र माहँ चितदीने। रहतसदा गृहकारज लीने॥ रजतम मान सहित दिनजाती। कहो गुरू मिलि हैं किहिभांती ५५ दो०। आयुबेलिको चरतहै कालवस्त सुखपाइ। गुरुउपदेश न रूंधियो बचिहै कौनउपाइ ५६ चौ०। या लिखने सो जानिनलीजै। मिलैंयोग्य गुरु तबहम कीजै॥ निश्चय गुरू करै सुखदाई। परयह जानिलेइ मनलाई ५७ होइ उपास नाम दृढ़सोई। गुरुसों मंत्र लिये निज होई॥ असन ग्रन्थ लखि मंत्र सुनाई। ताको चेला लेइ बनाई ५८ गुरु उपदेशमदृढ़ बि-श्वासा। कीजै जानि सदा सुखबासा॥ भले बुरेगुरुके जेकर्मा। निजमनमें जानै सब धर्मा ५९ गुरूरूपहैं भगवत आपू। तिन सो कछु नाहिंन दुष्प्रापू॥ इहिविधि मन गुनि करिबिश्वासा। तरै भवार्णव बिनहिं प्रयासा ६० जो बिश्वास न है मनमाहीं। गुरू महात्मा हो कैसाहीं॥ तौ कछु लाभ होइगो नाहीं। पुनि बिचार कीजै मनमाहीं. ६१ दो०। गुरुकरि भगवत मिलत हैं सो तौ कीन्हो नाहिं। कीन्हों तौ बिश्वास नहिं लाये निजमन माहिं ६२ सो०। अहै ठिकाना नाहिं तिनको कोऊ ओरसे। जियालाल समआहिं ऐसेजन बहुजगतमें ६३ चेलाकेबिश्वास तरेगुरूहू कहँकहूँ। कहत एक इतिहास अत्रसोइ सुखदायिनी ६४ चौ०। कोऊ इकखत्रीको बाला। सुनो गुरू सोबचन रसा-ला॥ की नँदनन्दन कृष्ण सदाहीं। बास करत बृन्दाबनमाहीं ६५ मन लगाइकै ढूंढै जोई। ताकों मिलैं तुरित तहँ सोई॥ यह बालक दर्शन कर चाही। पहुँचतभो बृन्दाबन माही ६६ ढूंढ़ो कतहुं पता नहिं पायो। तब लोगनसों पूंछन लायो॥ कहो कोउ हरिहैं गोलोका। कोउ कहो बैकुण्ठ विशोका ६७ परम धाम कह कोउ सिधाये। कौकह हैं नहिंपरत लखाये॥ इहिबिधि बचन सबनके सुनिकै। नहिं बिश्वास कियो यह गुनिकै ६८

की ममगुरू सत्यकरि भाखा । यह बिश्वास अचल उरराखा॥
भोजन पान नींद सब त्यागा । अचल चित्त हरि दरशन ला-
गा ६९ इत उत ढूंढ़त फिरत कृपालहिं । भक्त जनानँद कन्द
दयालहिं ॥ जड़वत मूक बधिरवत डोलत । हाँकहु दिये बचन
नहिं बोलत ७० श्रीवृन्दाबन बिपिन बिहारी । याबिधि ताकी
दशा निहारी ॥ दर्शन दिये प्रगट नँदलाला । सुन्दर अद्भुत
रूप बिशाला ७१ कुण्डल मुकुट पीतपट धारे । बैजयंति बन-
माल सँवारे ॥ कमल नयन मुख पंकज शोभा । नखमणिलखि
न मोह असकोभा ७२ सुभग कटाक्ष सुजन मनहारी । जाहि
मोक्ष श्रुति कहत पुकारी ॥ अलककेश सुन्दर सुखपागे । वा-
रिद जाल देखि लघुलागे ७३ उरभृगुपाद चिह्न मणिनीकी ।
शोभित भक्तजनन के जीकी ॥ रूप अपार मार मदमोचन ।
दर्शन करत रहत उरशोचन ७४ लखि स्वरूप बालक बनवारी।
शीश नाइ अस्तुति अनुसारी ॥ जै वृन्दाबन बिपिन बिहारी ।
जै गोपी जन आनँदकारी ७५ जै गोबर्द्धन धारणहारे । जयति
यशोदा नंददुलारे ॥ जै बकारि जैबकी विदारण । मणिग्रीव
नलकूबर तारण ७६ जै अघसूदन जैनरकारी । जैसच्चिदानन्द
असुरारी ॥ जै गोविन्द इन्द्र मदमोचन । तव मुख विधु चकोर
जग लोचन ७७ दो० । करिअस्तुति इहिबिधि बहुरि कहत
भयो सो बाल । ढूंढ़ो मैं दर्शन दियो सोईतुम नँदलाल ७८
सो० । सुनतअहौं यह बात की छलिया हैं नंदसुत । मननाहीं
पतियात चलौ गुरू ममके निकट ७९ चौ० । गुरु पहिचानिलेइँ
जब तुमहीं । । तब बिश्वास होइ दृढ़ हमहीं ॥ सुनि इमितासु
बचन यदुराई । निजजन आनँद कन्द सदाई ८० चले तासु
सँग आनँद पाई । गयो गुरू ढिग तुरित लवाई ॥ अर्द्धरात्रि
महँ पहुँचो तहवां । कोठेपर गुरु सोवत जहवां ८१ दीन्हो हांक
गुरुहि सुखपाई । जागौ उठौ लखौ यदुराई ॥ सुनि यह बात
चकृत गुरु भयऊ । खिरकी खोलि बिलोकन लयऊ ८२ मुखरर

कास प्रकाशित आसा। करपकरे बालक है पासा ॥ सुन्दररूप अनूपम शोभा। लखिस्वरूप मोहन असकोभा ८३ गुरुहि देखि बालक कह बानी। येहैं कृष्ण लेहु पहिंचानी ॥ करत ढिठाई तू गुरु भाखा। कृष्णहि हाथ पकरि क्यों राखा ८४ येहैं नंदनँदन सुखदाई। आवत हौं मैंहूं उत धाई ॥ यह कहि गुरु जबलग उत गयऊ। बालकयुत अंतर हरिभयऊ ८५ जाइ तहां देखो हरि नाहीं। अति धिक्कार कियो निज काहीं ॥ निज शिष्यहि सुमिरण पुनि कयऊ। उपजो ज्ञान बिरागहु भयऊ ८६ पुनि निज काहँ धन्य बड़जानी। दिये दरश मोकहँ हरिआनी। ॥ इहिबिधि निज शिष्यकि बिश्वासा। पयो अचल सुखद सुख बासा ८७ चाहिय याविधि गुरुबिश्वासा। तरिय भवार्णव बिनहिंप्रयासा ॥ रेमन तू कब याबिधि ह्वैहै। भवदुख बिन प्रयासही खैहै ८८ ब्रह्मा शिव नारद मुनि योगी। साधक सिद्ध-प्रपंच बियोगी ॥ जासु चरण रज शिरपर धारत। द्वंद्व जाल सब दूरिबिदारत ८६ तामें तू आलस कस कीन्हों। दुर्लभ लाभ मनुजतन लीन्हों ॥ तेरी दशा अभाग्य महाई। ताते भूलिगयो यह भाई ९० सोतू-अजहुं समुझु मनमाहीं। बिना प्रतीति होत कछुनाहीं ॥ वहगुरु सर्वोपरि श्रुति गावै। नेति नेति कहि वेद बतावै ९१ निशिदिन करसि चिंतवन मनमें। बाधाहोइ न शत्रु गणनमें॥ रेशठ का मानुष तनुपाई। मोह अंध ह्वै रहो भुलाई ९२ तनु असार कारज यह सारत। क्षणभंगुर क्षण विपति निवारत ॥ पर जब होइ विगत दुर्भाऊ। जिमि खट्वांग परीक्षित राऊ ९३ नत असार यह अति दुखदाई। जीवन मरण कलेश सदाई ॥ अस्थि मांस त्वग शोणित पात्रं। विष्ठापूय मूत्रमल गात्रं ९४तामें मोह काहँ तू पायो। वर्णतहौं सी समुझ सुहायो ॥ उत्तम हर्म्य शरीर सुहायो। स्थूण अस्थियुत शोभा पायो ९५ चर्म भीति आमिष सोलेपन। अति बिस्तृत नवद्वार सुहेपन ॥ स्नायू वेष्ठित मंदिर ऐसो। चेतन पुरुष नृपति तहँ वैसो ९६ मंत्री तासु बुद्धितहँराजत।

तब सब निन्दा करि जन गाये ॥ यह गुरु करि बिचार मन करिकै। जानि प्रेम मन आनंद भरिकै १११ देखि सबनके मन सन्देहा। रचो उपाय गुरूतब एहा ॥ अस्नान करत गंगा के माहीं। मांगत भये अँगौछा ताहीं ११२ इन बिचार कीन्हों मन माहीं। गुरूरूप गंगा ये आहीं॥ इन में चरण कौनबिधिदीजै। गुरुआयसु उत किमि न करीजै ११३ यह बिचार आवत तिन के मन। प्रगटे बारि कमल फूलनगन॥ तिन पर चरण धरतसो धाये। गुरुहिंअंगौछा दै फिरिआये ११४ लखि बिश्वास प्रभाव सुहावा। बार बार गुरु हृदय लगावा॥ नाम पाद पद्माचारय धरि। गुरु मनमाहँ महान कृपाकरि ११५ दो०। यह गुरुनिष्ठामें कथा सुन्दर कही सुहाइ। बिष्णु पुरीकी गाथशुभ अबबरणों मन लाइ ११६ चौ०। भगवद्भक्त रहे अति सोई। द्वितिय धर्मभावत नहिं कोई॥ श्रीकृष्ण चैतन्य सुहाये। महाप्रभू के शिष्य कहाये ११७ एकसमय पुरुषोत्तम धामा। भई परस्पर बातललामा॥ काशी माहँ मुक्तिके हेता। करतबास आनंद समेता ११८ तिन के गुरू कहे मुददेता। हैं काशी सतसंगति हेता॥ तिनकोआश मुक्तिकी नाहीं। यह गुरु कहत भये सबपाहीं। ११९ केवल हरि चरणन अनुरागत। तिनको मन न कहूं अरु लागत॥ पर काहूके मन नहिं आई। तब श्री गुरु यह रचो उपाई १२० बिष्णुपुरी ढिग पत्र पठायो। माला भेजन हेत सुहायो॥ मनकी बात जानि इन लीन्ही। मन बिचारि रचना यह कीन्ही १२१ श्री भागवत समुद्र मँझारा। रत्न समान श्लोक निकारा॥ रत्नावलि तिहि नामबखाना। शुभ श्लोक शतपंच प्रमाना १२२ दीन्हों भेजि गुरूके पासा। देखि सबन मन भो बिश्वासा॥ जाकेपढ़त सुनत सुखहोई। सुभगभक्ति हरिचरणन जोई १२३ जगत जनन हित कीन्ह प्रचारा। जिहि सुनि नाशत पाप पहारा॥ इहिबिधि कथा परम सुखदाई। बिष्णुपुरी की बरणि सुनाई १२४ ॥

दो०। वरणि कहौं शुभगाथ अब पृथीराज की जोइ। बासिंदे अजमेरके कछवाहे रह सोइ १२५ चौ०। द्वारावति पति दर्शन पाये।घरबैठे अति परम सुहाये॥ शंख चक्रके छापसुहाये। तिन शरीर पर प्रगटि जनाये १२६ निज गुरु कृपा भये बिख्याता। धर्मउपासनान के ज्ञाता॥ भीष्म पितामह सम पुण्यात्मा। भये युधिष्ठिरसम धर्मात्मा१२७ भेपूजक प्रह्लाद समाना। कृष्णदास के शिष्य सुजाना॥ एक समय हर्षित मनमाहीं। तिन गुरुचले द्वारिका काहीं१२८चलनसाज पृथिराजहु कीन्हा। तबमंत्रिन गुरुसों कहि दीन्हा॥ हाथ जोरि भाषे यह काजा। जो इतसों जैहै उत राजा १२९ बाढ़त भक्ति अहै इहि देशा। इन बिन होइहि क्षीण अँदेशा। सुनि गुरुनृप सों कहो बुझाई। रहौ आपनी राज्य मभाई १३० हाथजोरि बोले नृपएहा। गुरु सो छोड़ि न सकत सनेहा॥ आपुसंग दर्शनभगवाना। बहुरि गोमतीमें अस्नाना १३१ भगवत शस्त्र चिह्न तनमाहीं। एतौ लाभहोहिं इतनाहीं॥ सुनि गुरु कहो धरौ मनधीरा। यहसब तुमहिं होइ इतबीरा १३२ यहकहि गुरूचले जब गयऊ। अति ब्याकुल राजा तब भयऊ॥ तीजो दिवस महा सुखदाना। अर्द्धरात्रिकेसमय महाना १३३ गुरूपुकार नृपति सुनिपाई। शय्याते दौरे उठिधाई॥ तहांजाय देखे भगवानहिं। नंदनँदन ब्रज आनँद दानहिं १३४ पुनिअस्नान गोमतीकयऊ। शंख चक्र चिह्नित तनभयऊ॥ बारबार बिनती हरिकेरी।राजाकीन्ह मुदित मनहेरी १३५ पुनि राजाकी आयसुपाई। रानिहुमज्जन किय हरषाई॥ अति कृतार्थतनु आपन जानी। पुनि पुनि हरि चरणन रतिआनी १३६ प्रगटितभयो जगत यह हाला। नृपहि दरश दीन्हे नँदलाला॥ राजहि भेंटदेस सबआई। दरश करत जनपद सबधाई १३७ आवन लाग साधु तिन भेंटन। दरशन पाइ दुसह दुखमेटन॥ गुरूभक्ति भगवत पद आसा। सबकेहोत भयो बिश्वासा १३८ पुनि नृप हरिमन्दिर बनवायो। निशि

गुणिकै कीन्हों शोग १५२ सब जुरिमिलि तहँ आइ कहो तिन पाहिं। यह कारज तुम ठानो उत्तम नाहिं ॥ ते दोऊ सुनि सबके या विधि बैन। कहे कि गुरुके बचन टारिबे हैन १५३ चौ०। तिनकी विनय करत सब भयऊ। तब दोऊ कबीर ढिग गयऊ॥ कहो सकल वृत्तान्त सुनाई। तब कबीर बोले सुखपाई १५४ उनसों भक्ति लेउ कबुलाई। तब तिन सों तुम करउ सगाई॥ वैहैं भक्तिहीन नरजाते। करहु सगाई प्रथम नताते १५५ सुनि द्वौ बंधु तहां चलि आये। वरणि सकल वृत्तान्त सुनाये॥ सबहुन भक्ति ग्रहण तब कीन्हीं। हरि चरणारविन्द मति दीन्हीं१५६ होनलाग सम्बन्ध सुहायो। सबके मन आनँद अति छायो॥ भक्तनको प्रभाव इमि देखी। भये भक्तियुत सकल विशेखी १५७ दो०। तत्त्वाजीवाकी कथा इहिविधि कही बुझाइ। अब बरणौं उत्तम कथा खोजीकी सुखदाइ १५८॥

चौ०। खोजी गुरू निष्ठ अति भयऊ। तिनके गुरू चरित यह कयऊ॥ घंटा एक टँगा अस्थाना। करहिं प्राण मम जबहिं पयाना १५९ यह घंटा बाजैगो तबहीं। इमि समुझायो शिष्यन सबहीं॥ जबहीं गुरु शरीर निज त्याजा। तिहि क्षण घंटा नाहिंन बाजा १६० शिष्यनं मन चिंताभै भारी। तब खोजीआये तिहिबारी॥निज समाधिमहँ कीन्ह बिचारा। चूत मध्यफलकीट निहारा १६१ तत्क्षण तोरि सोईफल लीन्हों। भिन्न खण्ड ताके करिदीन्हों॥ जो वह कीट दृष्टितरआयो। तजो देह घंटाठहनायो १६२ तब सबके मन निश्चय आई। गुरुदीन्हो उपदेशमहाई॥ अंतकाल जामें मनलागत। सोई होत कलेवर त्यागत १६३ खोजीकेरिकथा इमिगाई। गुरूनिष्ठकी कहौंबुझाई॥गुरूनिष्ठइक अति बुधिवंता। कोमल चित्त दयायुतसंता १६४ गुरुसेवातजि और न जानत॥द्वितियसाधुकी सेवनठानत॥निजमनमाहँकहत गुरुदेवा॥करै औरहू साधुनसेवा १६५ तो यह सुंदर बातसदाहीं। इहिविधि गुरुबिचार मनमाहीं॥ इहिविधि गुरू करत बहुइक्षा।

कहि चले तुरित तिहि संगा। पहुँचे नृपढिग सहित उमंगा १६५
सब वृत्तान्त तुरित कहि दीन्हा। सुनिराजा अति बिस्मय की
न्हा॥ घाटमसों बोले सुखपाई। जो चाहौ सो लीजैभाई १६६
घाटमकह्यो कछु नहिं लेहौं। लेहौं अश्व इहै मन देहौं॥ सुनि
राजा तिनकाहँ सहेता। दीन्ह द्रव्य कछु अश्व समेता १६७
दो०। दीन्ह आइ निज गुरुकहँ द्रव्य समेत तुरंग। जियालाल
हरिकृपालखि भोमन मुदित अभंग १९८ चौ०॥ इहिबिधि घा-
टम कथा सुहाई। जियालाल संक्षेपहि गाई॥

अबनरबाहनकीशुभगाथा। कहौंनाइ रघुनाथहि माथा१६६
नरबाहनहरिभक्त सुजाना।रहभौंगांवबाससुखदानां॥हितहरिबंश
किशिष्य सुहाये। भगवद्भक्त महा सुखछाये २००गुरूभक्त साधू
सेवी अति। राधा बल्लभ में लागी मति॥ एक समय इकशाहू
कारा। नौकालियेजात सुख भारा २०१ नरबाहन लखि तासु
सिधाये। नौकालूटि महामुद पाये॥ औरौ द्रव्य लेनके हेता।
ताहि पकरिलाये सुनिकेता २०२ दीन्ह ताहि कारागृह डारी।
शाहूकार लहो दुखभारी॥ नरबाहन की चेरी एका। रही दया
युत सहित विवेका २०३ भोजनं देतं दिवस प्रतिलाई। पुनि
छूटन बिधि दियो बताई॥ आधीरात समय जब आवै। तू राधा
बल्लभ गोहरावै २०४ हितहरिबिंश नाम पुनि लीजौ! नरबाहन
पूंछैं कहि दीजौ॥ हितहरिबिंश गुरूमम सोहत। तिनको नाम
सुमिरि सुख जोहत २०५ सुनि उपदेश सुखद सुख छावा।
कीन्हो तैसोही मन भावा॥ सुनि नरबाहन सुखसों पागे। धाइ
शाहके चरणन लागे २०६ हालपूछि लज्जा अति पाई। तुरि
तहि सबधन दियो मँगाई॥ हाथजोरि बहु बिनती कीन्हा।
इहि बिधि बचनं कहन पुनि लीन्हा २०७ मैं अपराध कीन्ह
अति जोई। जानि गुरू प्रावैं अनि सोई॥ हाथजोरितब शाह
पुकारे। तुमबड़भाई अहौहमारे २०८ यह अचरज लखि शाहू
कारा। पायो मन आनन्द अपारा॥ हितहरिवंश शरण तकि

जाई। चेला होत भयो मुदपाई २०९ भो भगवत को भक्त सुजाना। जियालाल संक्षेप बखाना ॥ जियालाल तू कब मग ऐहै। तृष्णा उदधि पारकोंपैहै २१० ॥

अब गजपतिकीकथा सुहाई। वर्णनकरौं संतसुखदाई ॥ गजपति पुरुषोत्तम पुरराजा। भगवद्भक्त भयेसुखसाजा २११ दो०। श्रीकृष्ण चैतन्य गुरु तिनमें दृढ़विश्वास। राजकाज पछिकरत दर्शन करि सुख वास २१२ सो०। एक समयकी बात दर्शन हित गजपति नृपहि। मना कियो सुखदात गुरू कृष्ण चैतन्य ने २१३ चौ० ॥ तब राजा व्याकुल उर भारी। दर्शनकी चिंता मनधारी ॥ पर तिनके दर्शन नहिं पाये। दुख समेत ते दिवस गँवाये २१४ एक समयकी बात सुहाई। रथयात्राको अवसर पाई ॥ रथके आगे निज गुरु काहीं। नृत्यतलखो महामुदमाहीं २१५ देखत जाइ चरण गहि लीन्हा। साष्टांग पुनि पुनि पुनि कीन्हा ॥ इहि बिधि नृपति प्रेम विश्वासा। देखि गुरू उर अधिक हुलासा २१६ लीन्ह तुरित निज हृदय लगाई। प्रेमानन्द नयन जलछाई ॥ इमि गजपतिकी कथा सुहाई। मैंबरणी निज मति सुखदाई २१७ ॥

छन्दबरवा। चतुरदासकीगाथा बरणौंजोइ। परमभक्त वैरागी प्रगटेसोइ ॥ मग्नरहत भगवतके भजनसदाइ ॥ रँगे रहत रँग नित्यहि आनंद पाइ २१८ ब्रजमण्डल मथुरा में ठौरहि ठौर। सत्संगति सुख पावत सुख शिरमौर ॥ गुरू भक्त में ऐसे जिन सम कौन। गुरू सदा घर आवत पूजत तौन २१९ दो०। रूपवती नव यौवना युवती तासु सुहाइ। गुरुसेवा हित सौंपिकै जातभये चितचाइ २२० चौ० ॥ हर्षित ब्रजमण्डल में आय। दर्शन करत महासुख पाये ॥ मंगल आरति प्रातसमय की। करत सदा गोविंद देवकी २२१ पुनि शृंगार आरती नीकी। केशव देवकेरि निज जीकी ॥ राजभोग पुनि नन्दग्रामा। देखतगे गोवर्द्धन ठामा २२२ राधाकुण्ड देखि सुख पागे।

वृन्दावनहि गये चलिआगे ॥ एकबारकी बातसुहाई। नन्दगांव में अति सुख पाई २२३ मानससरवर पर सुखरासी। बिनाअन्न जल रहे उदासी ॥ नन्दगांवके स्वामीजोई। बाबानन्द कहावत सोई २२४ देखि निजाश्रम तिनहिं दुखारी। करनहेत आतिथ्य सुखारी ॥ श्रीनँदनन्दन अति सुकुमारा। षोड़श वर्ष वयस निज धारा २२५ लिये कटोरा पयसों पूरे। चतुरदासकहँ दिय सुख रूरे ॥ चतुरदास लखि रूप सुहावा। मग्नानन्द मोद उर छावा २२६ सुन्दर रूप विलोकन हेता। मांग्यो जल पुनिबुद्धि निकेता ॥ जल बिन भये विकल अतिभारी। पर बालकलायो नहिं वारी २२७ श्रीहरि तिनको व्याकुलजानी। स्वप्नमाहँ इमि कहो बखानी ॥ जलका कछू प्रयोजन नाहीं। दूध तुम्हैं मिलि है ब्रजमाहीं २२८ सुनि यह चतुरदास वर बानी। हरिसों बोले वचन बखानी ॥ ब्रजके जनन दूध प्रिय भारी। जाहित तुमहिं बांध महतारी २२९ सो वह दूध हमहिं किमिदेहैं। जो ये बचन कहे तुमने हैं ॥ सुनि हरि बोले तिनसोंबैना। अवशिदूध मिलि है सुख ऐना २३० यह कहिभेहरि अंतरध्याना। लागोमिलन दूध सुखसाना ॥ या विधि गुरुमें निश्चय करिकै। निज सिद्धान्तलहे मुद भरिकै २३१ ॥

राघवदास कथा अतिपावनि। बरणौं सुखदसंत मनभावनि ॥ परमभक्त भगवतके दासा। हरिचरित्र नितकरत प्रकासा २३२ तनको अतिदुर्बल करिडारा। भावभक्तिमें पुष्ट अपारा ॥ शास्त्रबचन को मानसलाई। भगवद्धर्म्म करत सुखपाई २३३ गुरूभक्ति में दृढ़बिश्वासा। त्यागीं सकल जगतकी आसा ॥ कोटिन दासनदैउपदेशा। दन्हिदिखाइ पुरानोदेशा २३४ अन्तर बाहर निर्मल कैसे। जगत बांयु लागी नहिंजैसे ॥ दिवसराति इहि भांतिबितावत। हरिचरित्रकीर्तन करियावत २३५ कहतकठोरबचननहिंकबहूं। कोऊदुःखदेतनिजतबहूं॥तिहिस्वभावहीरासमजानी। सन्तजनन मनकहा बखानी२३६ताको अभिप्रायय यह पाई।जाबि

धि हीराधरतनिहाई ॥ टूटतनाहिं घुसरितिहि जावै। हीरादेखि निकसि पुनिआवै २२७ तिमि सुखदुख तिनको नहिंब्यापे। छुधातृषा शीतोष्णनतापे॥ मिलतआइ सत्संगतिलेखी। हीराको हीराजिमि देखी २२८ सो०। जियालाल मनमूढ़ तूकसमग भूलोफिरत॥ संतचरित अतिगूढ़ ताको कछूबिलोकुतो २२९॥

इतिश्रीभगवद्भक्तानुरागदायकजियालालजन्माग्रेणबिरचितेचतुर्बिंशतिनिष्ठामध्येसप्तमगुरुमाहात्म्यनिष्ठायामेकादशभक्तकथावर्णनभक्ताम्बुनिधौनवमस्तरंगः ९॥

छन्दबरवा॥ निष्ठाअष्टमप्रतिमा अर्चाजाहँ। बर्णनपन्द्रह भक्तन कथा सुताहँ॥ शंखरेखरघुनन्दन चरणनकेरि। करौं हंस अवतार दण्डवत फेरि १ भयोकमलभवपुरीम यहअवतार। प्रश्नोत्तर सनकादिन दियेउदार॥ दीन्हो ब्रह्माजीको पुनिउपदेश। बहुरि जाइनिज मन्दिरकीन्ह प्रवेश २ दो०। कहतशास्त्र सिद्धान्तयह भगवतप्रापतिहेत। भगवतहीकोपूजिकै होवै सबसुखकेत ३ मंत्र जापसाधनआमितपूजा अर्चाजौन॥ इनहिंजोन साधनकियो हरिहिंमिलावै कौन४ भगवतकीन्हबिचारयह ममपूजासों मुक्ति। मेरोरूप कि देखिहैं यहगुनिकीन्हीयुक्ति ५ होइहिकिमि उद्धारजग जीवनको यह जानि। भक्तनहित अवतारलिय मूर्तिरूपजग आनि६ जिमि बद्रीनारायणहु रंगनाथ छबिखानि। स्वामिगोबिन्ददेवजी जगन्नाथसुखदानि७ बरदराज आदिकसुखद प्रतिमासुंदररूप। ब्रह्मशिवादिक थापियो पुनिजेऋषिमुनिभूप ८ थापित प्रतिमा इनहुँको भगवत देखिबिचार। प्रापतनाहीं जननको देखोदुख के पार ९ शालग्रामक भेषधरि प्रगटभये बहुरूप। तबहूंप्रासन देखियो कियेयह चरितअनूप १० आज्ञाइहिबिधिक्रतभे शास्त्र बचन सों भाखि। शैलदारुआयसमयी चित्रपत्रपरराखि ११ चौ० ॥ चन्दनादि लेपनकरिजोई। प्रतिमालेप्य कहावत सोई॥ सैकति मूरति बालूकेरी। मनोमयी मणिमय सुखढेरी १२ इहि बिधि प्रतिमा आठप्रकारा। वेद मंत्रसों पूजन सारा॥ जो पूजन

कीन्हो मनलाई। ताकोफल तत्काल दिखाई १३ जो अनन्य
है सेवाकीन्हा। सो निर्वाण चरण फललीन्हा ॥ जो कौ चित्र
लीन लिखवाई। पूजत हरि विश्वास लगाई १४ प्राप्तहोत भग
वत पदमाहीं। जियालाल यह मिथ्यानाहीं ॥ करुणा करकी
दया महाई। कोकवि वरणि पार जोजाई १५ या भगवत वपु
पूजन जोई। दर्शनादि भगवत प्रियसोई ॥ मान्योभक्तन बिवि
ध प्रकारा। जियालाल पावै किमिपारा १६ पैहैपार न संशय
यामें। संतविशांघ्रि भ्रमर मनजामें ॥ प्रतिमाको भगवत तनु
गुनिकै। या प्रकार पूजनकरु पुनिकै १७ मानसि पूजन अधिक
सुहायो। ताको करत कोउमुद छायो ॥ कोऊताही प्रतिमा का
हीं। वर्णतजाहि वेद गमिनाहीं १८ पूरणब्रह्म सच्चिदानन्दा।
मानत सुखदायक सुखचन्दा ॥ मानसि पूजनादि नहिं तहँवाँ।
मूरति भेदभांवहै जहँवाँ १९ बहुरि तृतीय वचन है एहा। वरणौं
सोऊ सहित सनेहा ॥ वास्तव मूर्ति सच्चिदानन्दा। सदा सर्व
गत आनँद कन्दा २० निर्गुण अगम अनूप सुहायो। निराकार
जिहि वेद बतायो ॥ शीघ्र ध्यानमें आवन एहा। ताते जासों
बढ़ै सनेहा २१ मूरतिको पूजत मनलाई। जाते श्रीहरि करैं
सहाई ॥ जो जैसी निश्चय मनलावै। ताहीभांति तौन फल
पावै २२ जबयह बात प्रगट मन देखत। भगवत प्रतिमा भेद न
लेखत ॥ भये जगत कोटिन उद्धारा। प्रतिमा के परभाव उदारा
२३ श्रीभागवत कहत इहिभांती। प्रतिमाको प्रभाव सुखपांती॥
भगवत मूरति दरश सुहावा। दरश मूर्ति दरशन करिआवा
२४ चढ़े मूर्त्ति फूलनको सूंघन। तुलसिदलासन हरिगृह कूज
न ॥ नमस्कार आदिक सुखदाई। हियधारत भगवतपुर जाई
२५ नारद पञ्चरात्र करगाना। शालिग्राम वारि असनाना ॥
होवै जौनपात्र सुखदाना। सप्तमभोवन गंग समाना २६ ति
नके दर्शनको फलभारी। जियालाल किमि कहै पुकारी ॥ पर
यह बात सलिल अतिनाहीं। राहचलत उत्तम पदजाहीं २७

उत्तम चरणजात कठिनाई। जहांगये दुखजात नशाई॥ सुंदर
शास्त्रनके अनुसारा। सर्वोपरि भगवत सुखसारा २८ व्यापक
अगुण अनूप सुहायो। नेतिनेति जिहिवेद बतायो॥ तामेंलाये
विन विश्वासा। भांतिभांति विनतजे दुरासा २९ छोंड़े मनकी
विना कचाई। भगवत कैसे परें लखाई॥ ऐसामन लागै जब
भाई। तब काहेन हरिहोइँ सहाई ३० कौनहिं द्वितिय ओर मन
जावै। शरणदूसरेकी नहिंलावै॥ रहिएकांत इविधिमतिसाधी।
जिमि पनिहारि घड़ागति बाधी ३१ श्री हरिइहिविधि बचन
उचारा। श्री भागवत माहँ सुखसारा॥ उद्धवनिश्चल मनइमि
होई। जैसेइषु निर्माणक कोई३२ मारग निकट बनावत बाना।
गयो नृपति इक सहित निशानां॥ कोटिन शुभचतुरंगिनि
सैना। गई सो न जानो बुधि ऐना ३३ रहीदृष्टि नाराचम ताकी।
ऐसी होइ सुमति दृढ़जाकी॥ जिमि चकोर चित चँदम धारा।
तिहि सनेह वश भषत अँगारा ३४ जरत पतँग दीपकरिनेहा।
तजत न नेह तजैबरु देहा॥ काम बिवश जिमि तियमनलावै।
निजतन सुधिबुधि काह भुलावै ३५ इहि बिधिनेह भये बिन-
भाई। भगवत दर्शन दुलभमइाई॥ इहि विधिप्रेम मूर्त्ति मोंधरि
कै। आवागमन तरै मुद भरिकै ३६ छन्दगोपाल। बाइएकदेश
गुजरात। भगवतसोंजोरयोनिजनात॥ धारिभाववात्सल्यअनूप।
सेवाकरतसदासुखरूप३७बासकरतसोबाईजाहँ।भईप्रबलताबृकन
किताहँ॥वहुबालक उठाइवृक लीन्ह। तबबाई मनचिंताकीन्ह३८
चौ०॥ममबालक वपुश्रीभगवाना॥तिनहिवृकाजनिग्रसैअयाना॥
दिन पूजत भगवत सुखपागत। तमी पाहरू करलै जागत ३९
भगवत देखि दया अति कीन्हा। दरशन आइ ताहि निशि
दीन्हा॥ देखि झमझमाहट सुनि काना। आभूषण भूषितभ-
गवाना ४० पूंछो कोतू है कित जावै। मोसों सब वृत्तान्तबता-
वै॥ श्रीहरि कहो अहों मैं सोई। पूजत है मूरति तू जोई ४१
इच्छा होइ मांगु सो मोहीं। देहों मनवांच्छित द्रुततोहीं॥ कह-

बाईप्रसन्न जो मोपै। यहबर मांगतहौं मैं तो पै ४२ ममबालक
बपुश्री भगवाना। तिनहिं ग्रसै जनि वृक अज्ञाना॥ ऐसीप्रीति
होइ जब मूरति। क्षणपल विपल टरै नहिं सूरति ४३ कोऊ सेवक
जौन प्रकारा। सेवत स्वामिहिंप्राण पियारा॥ नाना भांतिबस्तु
तिहिआगे। धारतअधिक प्रेम अनुरागे ४४ तिमिपूजै मूरति सुख
पाई। नानाबिधि सेवा दरशाई॥ पूजनषोड़श बिधिसुख छायो।
मानसिपरगट दुहुनबतायो ४५ सामग्री परगटपरगटमें। शुद्धबस्तु
पूजन मानसमें॥ षोड़शमाहँप्रथमहै एहा। आह्वानजो सहित
सनेहा ४६ निजस्वामीको प्रातजंगावन। करिदण्डवच्छ्लोक
पदगावन॥ दोसरमन्दिरशुद्धबनावन।सिंहासनपर चैलबिछाव-
न ४७ तृतियपाद्य भगवतको देनो। पोंछिअंघ्रिअंशुक सोंलेनो॥
अर्घचतुर्थहाथमुखधोवै। पंचमदंतधावनीदेवै४८षष्ठसुगंधसलिल
अन्हवावै। पोंछैदेह बस्त्रपहिरावै॥ सप्तमशुभबस्त्रालंकारा। भूषि
तकरै अनेक प्रकारा ४९ अष्टमयज्ञोपवीत सुहावै। स्वर्णपाटकै
सूत्रगहावै॥नवमसुगंध देहमेंलावै। चंदन केशरमृगमदकावै ५०
दशमपुष्प फूलनकी माला। झूमकुसुकटादिकसुरसाला॥ धूप
धूमएकादश गायो। द्वादश दीपक सुभग सुहायो ५१ त्रयो
दशमं नैवेद्य अपारा। ब्यंजन स्वाद अमित नहिं पारा॥ सो
भोजन कराइ सुख पाई। जल पियाइ आचमन कराई ५२ पों-
छैकर मुख सुन्दर वासा। दै ताम्बूल सुखद मुख बासा॥ चतु
र्दशम दक्षिणा सुहाई। आगे भेंट धरै सुखपाई ५३ पंचदशम
नीराजन जानौ। प्रदच्छिणा पुष्पांजलि मानौ॥ अहै विसर्जन
षोड़श जोई। शयन जबहिं भगवत कर होई ५४ शुभ पर्य्यंक
बिछावन जामें। भगवत काहँ सोवावै तामें॥ चापै चरण महा
सुखसारा। इमि पूजन षोड़श परकारा ५५ इहिबिधि पूजन
बिबिध बिधाना। मूरतिको सुखदायक नाना॥ नरनारायण
गोविंद देवा। रंगनाथ स्वामी जगसेवा ५६ शालग्राम मूर्ति
सुखदायक। पुष्कर निम्बषार सबलायक॥ द्वादशद्वादशकोश

प्रमाना। करत शुद्ध सबभांति महाना ५७ देवन थापित मूर्त्ति विचित्रा। योजनैकलगि करत पवित्रा॥ सिद्ध ऋषेश्वर थापित जोई। योजनार्द्ध पावन कृत सोई ५८ शास्त्र विहित मंत्रन अनुसारा। थापित मनुजन सब सुख सारा॥ एक एकसो कोश प्रमाना। करत पवित्र प्रभाव महाना ५९ जो मूरति अवसथमें राजत। ताही मन्दिर में सुखसाजत॥यामन लागन केर उपाई। ईश्वर बहुबिधि दीन्हबनाई ६० याहूपरलागै जो नाहीं। धृगधृग आतम हतगति जाहीं॥ खरशूकर कूकर अति नीके। सीता राम न भावतजीके ६१ औरैतनकृत पाप न व्यापत। संचितपाप शरीर न तापत॥ विनाभजन या मनुजशरीरा। कोटिन पापदेत अतिपीरा ६२ कवित्त॥ मोरपँखा शिरऊपर राजत केशर खौरदिये रचिभालहि। अंजनसे दोउरंजित कीनेजु खंजन कंजसे नैन विशालहि॥ गोलकपोलनपै कलकुण्डल रूपअनूप प्रताप रसालहि। रेमनमंद अनंदको कंदतू क्योंनभजै नँदनन्द गोपालहि ६३ दो०। मूरतिनिष्ठा सुभग अति वर्णन कीन्ही जोइ। तामें जे निष्ठितभये बरणिकहौं कछुसोइ ६४॥

चौ०। प्रथमहिं नाम-देवकी गाथा। बरणौंनाइ रामपद माथा॥ ज्ञान देवके शिष्य कहाये। भक्तिमार्ग जगमगफैलायें ६५ बालापनसों तनमन दीन्हा। भगवतको निजबश करिलीन्हा॥ जासु जन्म भगवतके अंशा। जाको श्रुति नितकरहिं प्रशंसा ६६ ताको यह वृत्तान्त सुहायो। पंडरपुर जो ग्राम कहायो॥ बामदेव छीपी इकरहई। भगवद्भक्ति वचनमन गहई ६७ ताकी कन्याबुद्धि प्रवीना। बालापन विधवा विधिकीना॥ द्वादश सम्वतकी गुनिबाला। बामदेव कह बचन रसाला ६८ पुत्री सुनौ वचन ममयेहा। भगवत सों कीजै निजनेहा॥ जो इच्छाकरिहौ मनमाहीं। तिन प्रताप कछु दुर्लभ नाहीं ६९ सुनि कन्या मनभो विश्वासा। हरिपद सेवत सब सुखवासा॥ अलपकालहर्षितहरिभयऊ। सकल मनोरथ पूरणकयऊ ७० भोगेच्छा भगवतसों कीन्हा॥

तुरतहि आइ सुरति हरि दीन्हा ॥ ताके भयो गर्भको वासा ।
सब पुरमहँ यह भयो प्रकासा ७१ बामदेव सुनि नगर चवाऊ।
आयो मन संसारीभाऊ ॥ कन्यासों बोले रिसपागी। काहभयो
यह मंद अभागी ७२ कह कन्या सुनिये पितु बानी । जो तुम
प्रथमहिं कहा बखानी ॥ इच्छा तव मनमें जो होई। पूरणकरहिं
सकल हरि सोई ७३ ताते पितु सन्देह न कीजै। भयो सो भग-
वतसों गुनिलीजै ॥ बामदेव या विधि सुनि बानी । मग्न प्रेम
तन दशा भुलानी ७४ भयो पुत्रको जन्म सुहायो । बामदेव
निज भवन लुटायो ॥ धन सम्पति जेती गृह माहीं । हर्षविवश
राखा कछु नाहीं ७५ नामदेव असनाम बखाना। प्राणति अधिक
तिनहिं प्रियजाना ॥ जिन अयोग्य यह निजमन जानी। वे वि-
श्वास हृदय निजआनी ७६ बामदेव निज मनमें सोधा। कीन्ह
पुराणनसों पुनिबोधा ॥ जोजिमि भगवतमें मनलावै। सो तिहि
भांति अवशि फलपावै ७७ वामदेव निज मनयह गुनिकै ।
कियसन्देह दूरितम धुनिकै ॥ भगवत धरत भक्तहित देहा।
जियालाल यहनहिं सन्देहा ७८ नामदेवको जन्म सुहावा ।
मैं वर्णन कीन्हों सुखछावा ॥ अब वरणौं तिन चरित सुहाये।
भांति अनेक भक्त मनभाये ७९ नामदेव जी अति सुखछाये।
बालापन सों हरि मन लाये। हरिआराधन खेल सुहाये ॥ खेल
त भगवत मूर्त्ति बनाये ८० पूजत महामोदसों भरिकै। नाना
विधि आभूषित करिकै ॥ पूजत बामदेव को देखी। दिन प्रति
मांगत मूर्त्ति विशेखी ८१ पर न देत सो बालक गुनिकै। प्रेम
बढ़ावत सो पुनि पुनिकै ॥ एक दिवस की बात सुहाई। बाम-
देव बोले सुख पाई ८२ कोऊ ग्राम जातहौं अहऊं। चारि
दिवस तासों थिर रहऊं। तुम सेवा पूजा नित कीजौ ॥ भगवत
को भोजन शुभ दीजौ ८३ करैं भोग तुव अंगीकारा। तौपूजा
सौंपौं सुखसारा ॥ नामदेव सुनि आनंद पाये। भगवत सेवा
में मन लाये ८४ बामदेव सब रीति बताई। भगवत सेवा

की समुझाई ॥ आपुगये तिहिग्राम सिधाई। नाम देव पूजामन लाई ८५ संध्या समय सहित अनुरागा। भगवत सेवामें मन लागा ॥ जबतक गौबनसों नहिंआई। तबतक आपुगये तहँ धाई ८६ हर्ष सहित ताको गृहलाये। अविलंबित तिन दुग्ध लगाये ॥ सुंदर आनि उष्णद्रुत कीन्हा। मिश्रीडारि पात्र धरि लीन्हा ८७ लैभगवत के सौहीं गयऊ। पर बहु भांति डरत मन भयऊ ॥ मोसनभयो नहो अपराधू। जो मनधारैं बुद्धि अगाधू ८८ इहिविधि डरतहरत तहँ गयऊ। आगे धरतकटोरा भयऊ ॥ पर भगवत पीन्हों नहिं जबहीं। भये उदास अमित मन तबहीं ८९ हाथ जोरिकरि विनय सुनायो। पीजै पय सुन्दर मैं लायो ॥ मिश्री अधिक परी है यामें। सुन्दर स्वाद प्रगट है जामें ९० निजसेवक गुनिपीजै स्वामी। बारअनेकनमामि नमामी ॥ पीन्हजबनतबरोवन लागे। अमित भांतिकरुणा रसपागे ९१ इहिबिधिबीति गयेदुइदीना। सन्मुखठाढ़ेरहे मलीना॥ तीसर दिवस भयोइमि जबहीं। अधिक उदासभयो मनतबहीं ९२ नामदेव मनकीन्ह बिचारा। त्राना मम ऐहै इहिबारा ॥ जो नहिंक्षीरपियैं भगवाना। पूजाकरनदेइनहिंनाना ९३ बारबार बिनती पुनिकीन्हा। मानाजबनछुरी तबलीन्हा ॥ छूरीलैचहकंठ लगावन। निरखि हाथपकरो मनभावन ९४ अतिबिश्वासभक्त करदेखी। लागेपीवन दूधबिशेखी ॥ एकहाथछूरी गहिलीन्हा। दूजे हाथकटोराकीन्हा ९५ दो०। पीवतमें भगवानके रह्योस्वल्पज-बक्षीर। नामदेवतबमुदितमन कहेबचनधरिधीर ९६ चौ०॥ त्रिदिनक्षुधित बीतेमोकाहीं। इतनाहूदेहौममनाहीं॥ हँसिभगवानति-नहिंसोदीन्हा। नामदेव द्रुतकरगहिलीन्हा ९७ अधरामृतसमेत हरिकेरा। कीन्होपानदूधातिहिबेरा ॥ इहिबिधि नामदेव सुखसा-रा। कियप्रसन्न दशरत्थ कुमारा ९८ आयोनामदेवको नाना। सुनिचरित्र अतिशय सुखमाना ॥ नामदेवसों कहो बुझाई। हमहूं को हरि देहु दिखाई ९९ नामदेव सुनि मन सुख कयऊ।

लै पय हरि के सौहीं गयऊ ॥ कछुक बिलम्ब कीन्ह हरि जबहीं।
लीन्हों काढ़ि छुरी वह तबहीं १ देखि छुरी हरि पीवन लागे।
बामदेव निरखे सुख पागे ॥ धन्य धन्य निज जीवन जाना।
बामदेव अतिशय सुखमाना १०१ प्रगटितभई दूरि लगि बाता।
नामदेव मिश्रित हरि जाता॥ यह सुधि बादशाह सुनि पायो।
नामदेव कहँ तुरत बुलायो २ कहो कि ईश्वर मोहिं दिखावौ।
जाके दर्शन तुम नित पावौ ॥ निज सिद्धाई मोहिं दिखैये।
बहुरि आपने मन्दिर जैये ३ नामदेव बोले सुनि एहा। महाराज
सुनु सहित सनेहा ॥ जो मोमें होती सिद्धाई। छीपी कर्म कि
करते भाई ४ द्वार हमारे आवत कोऊ। करते अशन बाँटि जन
दोऊ॥सो सुनि आपहु लीन्ह बुलाई। और न मोमें कछु सिद्धा-
ई ५ बादशाह कह यह न बसाई। मरी गऊ यह देहु जियाई॥
नाहिं त काटि तोर शिर लेहौं। जीवत भवन जान नहिं देहौं ६
नामदेव सुनि हर्ष बढ़ायो। तुरितहि एक विष्णुपदगायो॥ गावत
उठी गऊ सुख पाई। बादशाह मन अचरज लाई ७ आयो
नामदेव की शरणा। शीश नवाइ परो पुनि चरणा॥ बोला हाथ
जोरि तिन आगे। नाना भाँति बचन अनुरागे ८ मांगहु राज
कोश धन धामा। गज रथ हय पालंकि सुख सामा॥ सो मैं देहुँ
रहित सन्देहा। नाम देव बोले सुनि एहा ९ दो०। हमहिं कछू
नहिं चाहिये बिदा मात्रकी चाह। सुनि सुवंरणमय पलँगइक
दीन्हो शाहन्शाह १० चौ० ॥ पठवन हेत भृत्य बहु दीन्हे। बि-
नय समेत बिदा पुनि कीन्हे॥ नामदेव मारगमें आई। सब
लोगनको दीन्ह घुमाई ११ दीन्होडारि पलँगसो सरिता। आपु
गये मन्दिर सुदभरिता ॥ बादशाह या बिधि सुनिपायो। सोई
पलँगा मांगि पठायो १२ नामदेव मनकीन्ह बिचारा। सरित
जाइ बहु पलँग निकारा॥ नामा रङ्ग रूप बहु भांती। जेमनुजन
पहँ गढ़ेन जाती १३ लोगन पहँ बोले यह बानी। आपन प-
लँग लेहु पहिचानी ॥ बादशाह सुनि या बिधि हाला। चरणन

परो आइ ततकाला १४ दो०। नामदेव कह सुनहु यह अब न बुलाउब मोहिं। दुख न दीजियो संतको यहौ सिखावौं तोहिं१५ नामदेव इक दिन सुखकारी। पंडरपुरको गये सिधारी॥ ठाकुर द्वार दरश हित गयऊ। तहँ बहु लोग देखि भ्रम भयऊ १६ कटितट बांधि उपानह लयऊ। दरश हेत मन्दिर बिच गयऊ॥ कोऊ लीन्ह उपानह देखी। मंदिरसों दिय काढ़ि विशेखी १७ मंदिर पृष्ठ बैठ सो जाई। दरश न पाये मन बिकलाई। हाथ जोरि किय विनय महाना। कीर्त्तन पुनि कीन्हो सुखदाना १८ कीर्त्तन सुनिहरि अति अनुरागे। कान लगाइ सुनन सो लागे॥ नामदेव दिशि मन्दिर भयऊ। कीन्हो दरश सकल दुख गयऊ १९ देखि महन्त आदि सब लोगा। चरणन परेआइ सहसोगा॥ कहे कि क्षमियो मम अपराधू। तुमहरिजन मति बुद्धि अगाधू २० दक्षिण मुख मंदिर तब तेरे। भक्त हेत करुणानिधि फेरे॥ करुणानिधिकी कृपा महाई। जियालाल किमि बरणि लहाई २१ एक दिवस यह भयो चरित्रा। नामदेवके भवन पवित्रा॥ लागी अनल कराल विशेखी। नामदेव हरषे यह देखी २२ बचोवस्तु घरमें कछु जोई। दीन्हो डारिशिखीमधि सोई॥ कहो करौ सब अंगीकारा। सुनि बिहँसे भगवत सुखसारा २३ कह मोको तेजहु मो जोहै। अपरदोसरो तुम बिन को है॥ प्रभु बिहँसे प्रसन्न अति भयऊछाइ भवन निजकर सों दयऊ२४लोगन देखि कीन्ह सन्देहा। याबिधि को छायो घर एहा॥लेत मँजूरी सो कि-हि भांती। नामदेव बोले सुख पांती २५ लेत मँजूरी कड़ी महा-ना। प्रथमहिं तनमन चहत निदाना॥ तिहि पीछे दरशन वह देवै। कारज सकल सिद्धि करिलेवै २६ जियालाल जेहरि मन देवैं।तिनके कार्य सिद्ध किन होवैं॥एक समयको चरित उदारा। पंडरपुर इक शाहूकारा २७ तुलादान किय सुवरण केरा। बाँटो सकल नगर चहुँफेरा॥ नामदेवहू काहँ बुलायो। नामदेव यह कहि पठवायो २८ हमको चाह द्रव्यकी नाहीं। बांटो तुम

सब औरनकाहीं॥बेरतीसरी फेरिबुलाये। तब तो नामदेवचलिआये
२९ शाहूकारा नंदित भयऊ। बचन बहोरि कहन इमिलयऊ॥
कछुक आपहू सुवरण लीजै। महामोद मेरेमन दीजै ३० नाम
देव मनकीन्ह बिचारा। यामनभो श्रीगर्ब अपारा॥ ताकोदूरि
करौं मैं आजू। प्रगटौं रामभक्ति करसाजू ३१ यह मनगुनि तुल
सीदल लीन्हा। लिखिरकारता ऊपर दीन्हा॥ याभरि सुवरण
मोकहँ दीजै। शाहूकार जगत यशलीजै ३२ शाहूकार प्रथम
इमिबोले। जिमिबलि बामन वचन अमोले॥ वारिधि मथन
सुराऽसुर कीन्हा। चौदहरत्न काढ़िंतहँ लीन्हा ३३ श्रीमणिरंभा
बारुणि नामा। अमिय शंख गजपति सुखधामा॥ शशिधनु
धेनु कल्पतरु जोई। धन्वंतरि हय गरलहु सोई ३४ तेरह रत्न
बांटिसब लीन्हा। अमृतदेखि बिषममति कीन्हा॥ धन्वंतरि कर
अमिघट देखी। धाये आसुर लिप्सि विशेखी ३५ अतिबल स-
हित छीनि तिनलीन्हा। बहुरि विवाद परस्पर कीन्हा॥ बली
अबलसों लेत छुड़ाई। तासों अपर लेत द्रुतधाई ३६ यह चरित्र
देवन अवलोका। मनं में प्रगटभयो अतिशोका॥ जाइ विष्णु
सों कहो बुझाई। अमिंत दीनता प्रगटि जनाई ३७ कहो विष्णु
धीरज मनदीजै। मन में कछू शोचजनि कीजै॥ हम अपनी
मायाको रचिकै। साधहिं कार्य सकल सुख सचिकै ३८ भये
विष्णु कहि अंतर ध्याना। प्रगटे योषिद्रूप सुजाना॥ परमाद्भुत
बपु वरणि नजाई। जियालाल कविमति सकुचाई ३९ श्यामो
त्पलसम अंग सुभग अति। कर्ण समाना भरण हरतमति॥
सुभगानन कपोल कुचनासा। कृशोदरी नवयुवा प्रकाशा ४०
मुखकी सुरभिपाइ अलि धावत। नयन कटाक्ष सुभग दरशा-
वत॥ सोहत केश सुभग अतिनीके। धारितमाल मल्लिका
जीके ४१ कंठाभरण ग्रीव शुभ राजत। सुभुजांगद भूषित अति
साजत॥ विरजाम्बर संवींत सुहाये। कांची सहित नितम्ब महा
ये ४२ किंचिद्धास ब्रीड़युत राजत। भ्रूविलास अति शोभा

साजत ॥ चितवनि कामोद्दीपन करणी । सकल दैत्य यूथप मन हरणी ४३ लरत असुर सब अमृतकाजा । तबलौंतीय लखी शुभसाजा ॥ अहोरूप सुन्दर वयजासू । पूंछतभये निकट गत तासू ४४ कोतुम कमल नयनि सुकुमारी । कहांजाहु काइच्छा धारी ॥ किहि बामोरु काकी जाई । मथत चित्त मन्मथ बरिआई ४५ दो० । सिद्ध सुरासुर चारणन गंधर्वनके माहिं । नरन मध्य किमि रूपयह लोकेशन के नाहिं ४६ सो० । निश्चय हम यह जान हेसुभ्रू देहिन हितै । पठई हंस विमान तुमहिं इन्द्रिमन वश करन ४७ चौ० । सो हम तुमसों भाषत एहा । सुनहु वचन सो सहित सनेहा ॥ एकवस्तु कारण हमलरहीं । ज्ञातीवद्ध वैररुट भरहीं ४८ हम कश्यपके तनय सुहाये । सबमिलि श्रम करिकै सोलाये ॥ दीजैबाँटि न्याययुत सोई । जामें रंचभेद नहिंहोई ४९ सुनिवाणी हरि योषिद्रूपा । हँसिबोले शुभ वचन अनूपा ॥ कैसे तुम कश्यप सुतह्वैकै । किय विश्वास पुंश्चली ज्वैकै ५० करत न पण्डित तिय विश्वासू । शालावृक समान हियजासू ॥ जेतीस्वैरिणि तिय जगमाहीं । कोऊमित्रं अहै तिननाहीं ५१ त्यागहिं पुरुष करत रतिजोई । पुरुष नवीन माहँ मनहोई ॥ यह कहिकै किय किंचिद्धासा । नयन कटाक्षहु भौंह विलासा ५२ भये असुर मोहित तिहिवारा । लै अमृत घट हरि कर धारा ॥ पायो अमृत घट हरि जबहीं । या विधि वचन कहत भे तबहीं ५३ साधु असाधु करहिं हम जोई । सबको ग्रहण करनहै सोई ॥ भये असुर मोहित तिहि काला । अंगीकृत किय वचन रसाला ५४ करि अस्नान हिये ब्रत धरिकै । अनल होम कीन्हों मुद भरिकै ॥ दिय गोदान द्विजन सुख पाई । कियस्वस्त्ययन विप्र समुदाई ५५ पहिरि अंग निज बस्त्र सुहाये । बैठ कुशासनीन सुखपाये ॥ असुर देव पूरुब मुख करिकै । बैठे महा मोद सों भरिकै ५६ धूमा मोदित शाला माहीं । दीप माल शोभित बहुधाहीं ॥ ता मधि बैठ सुरा सुर देखी । किय कटाक्ष

तिय बिष्णु बिशेखी ५७ सुभग दुकूल श्रोणि तट राजत। मद
बिह्वल चख गज गति साजत ॥ नूपुर पुरट सोह रव जीकी।
कुंभस्तन घट कर गति नीकी ५८ कीन्ह प्रबेश सुरासुर माहीं।
अमृत बांटन हेत जहांहीं ॥ देखि रूप सुन्दर तिन केरा। मोह
सुरासुर लहतिहि बेरा ५९ असुरन काहँ सुधा को दाना।
सर्पन के समान प्रभु माना॥ अमृत यह गुनि तिनहिंन दीन्हों।
पंक्ति भेद तिन असुरन कीन्हों ६० पंक्ती पृथक् दुहुनकी
करिकै। बांटन लगे सुधा मुद भरिकै॥ प्रथमहिं देव पंक्ति में
गयऊ। तहां अमृत पुनि बांटन लेयऊ ६१ दीन्हों बचन समय
सो पालत। तूष्णी असुर लखत नहिं चालत॥ तिय सों
करि नहिं सकत बिवादा। निंदित जग में अति दुर्बादा ६२
बँधे नेह मोहिनि सब बीरा। कछु न कहत बैठे रणधीरा॥ यह
चरित्र स्वर्भानु जु देखा। गोसुर संसबि करि सुर भेखा ६३
पीवन सोम जबहिं मन लायो। सोम सूर्य दुत हरिहि बतायो॥
हरि यह जानि चक्र झट लैकै। काटो शीश पिवत तिहि
ज्वैकै ६४ गिरो कवंधामृत बिन पीन्हें। शीश अमर गुनि अज
ग्रह कीन्हें॥ सोई पर्वै पाइ दुखदाई। चंद्र सूर्य पहँ आवत
धाई ६५ अमृत पान देवतन कीन्हा। देखत बिष्णु रूप निज
लीन्हा॥ असुरन के देखत भगवाना। योषिद्रूप तजो सुख-
दाना ६६ सो०। सुरनामिय इमि पीन्ह सो फल पाये सकल
बिधि। पदरज नित मन दीन्ह असुरन ताते दुख लहे ६७ दो०।
जे असु बसु मन कर्म बच देहात्मज तिय आदि। गुनत पृथक्
इहि असतको तब लग हैं दिन वादि ६८ एक ईश को रूप है
द्वितिय कछू है नाहिं। मूल निषेचन के किये जात शाख दल
माहिं ६९ अपृथक् सोई जानिये जग जानै हरिरूप। हरि मेंही
सब जानिये है यह भाव अनूप ७० जैसे चंद तड़ाग में छाया
लखिय अनूप। ऐसेही संसार में जानिय ईश स्वरूप ७१ जैसे
चंद तड़ाग में मिथ्या रूप लखाइ। ऐसेही संसार में व्यापे हरि

सब ठाँइ ७२ जिमि शशि अपनी किरण सों औषधीन रस देत । तिमि सत्ता परकाश सों हरिजन दुख हरि लेत ७३ जिमि सर बिधु छाया निरखि नभ बिधु देखै कोइ । सत्ता तिमि लखि जगत में ईश चरण लखु जोइ ७४ या बिधि सुर जाने हरिहि ताते अमृत पाव । हरि करुणा कर दानि मणि जियालाल तिन गाव ७५ चौ० ॥ या बिधि दैत्यन अमृत न पावा । अपन जानि हरिसुरन पियावा ॥ इमि पूरण करि देवन कामा । बैठिबीशगे हरि निज धामा ७६ दैत्यन देखि सुरन की बाढ़ी । उपजी हृदयमहा रिसगाढ़ी ॥ लीन्हे सब आयुधतिहि बास । देवनहूं लखि अस्त्रसँभारा ७७ अमृत पिये बली सुरसर्ब । हरिहिसुमिरि रणचले सगर्ब ॥ लागे करन सुरासुरयुद्धा । अस्त्रशस्त्र छांड़त ह्वै क्रुद्धा ७८ भयो तहां देवासुर नामा । दारुण महाकठिन संग्रामा ॥ कूलपयोनिधि अति सुख दाई । तुमुल रोमहर्षण कविगाई ७९ तहांपरस्पर क्रोध बढ़ाई । लगे लरन निजधनुष चढ़ाई ॥ नानाअस्त्र शस्त्र विकराला । छोंड़तभये सुरासुरहाला ८० दो० । शंख तूर्य भेरी डमरु शब्द मृदंग महान । करि हय-रथ पैदर नदत तिनको प्रगटोजान ८१ रथी रथीसों लरतभे पत्तीपत्ती जोइ । हय हय सों इभसोंकरी उष्ट्र उष्ट्र लखिसोइ ८२ सज्जत संयुग के बिषे यांविधि बाहन पाइ । खर चढ़िकोऊ गौर मृगं ऋक्षदीपि सहजाइ ८३ कोऊ शाखा मृग सहित कोऊ गृध्रसमेत । कोऊ बककौश्येनयुत भास तिमिंगिल लेत ८४ चौ० ॥ सरभसवार कोउ भटभयऊ । कोउ महिषचढ़ि रणमहि गयऊ ॥ कोउ बृष षड्गगवय चढ़िधाये । शिवाआखु कृकलास सुहाये ८५ शश नरवस्त कृष्णमृग चढ़ि कै । धाये शूकर हंसन बढ़िकै ॥ जलथल के खग सत्वमहाना। विग्रह विकृत भयंकर नाना ८६ दोनों सेन सुरासुरं माहीं ॥ अग्रति अग्र बिसे चहुघाहीं ॥ चित्रध्वज पट अमल सुहाये । आतपत्र सित सुखद महाये ८७ चामर ब्यजन महाधन पूरे ।

वज्रदंड शोभित अति रूरे ॥ बातोद्धूतोत्तर उष्णीषा। कुंडलवर्म सृक्शुभभूषा ८८ सूर्य्यरश्मिलागत जबआई। चमकि उठत सहास्त्र समुदाई॥ दानव देव बीर कटकाई। सागर मथि यादस समगाई ८९ बैरोचन बलितिहि संग्रामा। असुर चमूपति सब गुण धामा॥ बैहायस बिमान तिहिनामा। कामग मयनिर्मित सुखधामा ९० सांग्रामिक सत्र सहित सुहावा। सर्वाश्चर्य मयी मनभावा॥ अतर्क अनिर्देश्य दृशमाना। बहुरि अदर्शन सर्व गयाना ९१ तापर चढ़ि बैरोचन बीरा। आवृत सर्व अनीकप धीरा॥ बालव्यजन छत्रअति सोहत। चंद्रोदय इवलखि मन मोहत ९२ दो०। ताके संगहि यूथपति चढ़े असुर बलधाम। आवृत करि तिन के रथहिकहौं कछुनके नाम ९३ चौ०। शंवर नमुचि, बाण अति योधा। बिप्रचित्ति साजो करिक्रोधा॥ चलोद्धिमूर्द्धायोमुख साजी। कालनाभ इल्वल युतगाजी ९४ हेतिप्रहेति शकुनि युतराजे। बहुरिभूत संतापहुसाजे॥ बज्रदंष्ट्र सजसहित विरोचन। हयग्रीव अरुचक्र बिलोचन ९५ शंकुशिराअरु कपिल सुहायो। मेघ डुंडुभी तारक धायो॥ उत्कलशुंभ निशुंभ समेता। मय त्रिपुराधिप भट सुदकेता ९६ पुनिपौलो मारिष्टहु आयो। बहुरि अरिष्ट नेमि सुखछायो॥ कालेया नि-वात कवचादी। आये सकल बीर रणबादी ९७ अमृत पान सुरन सब कीन्हा। दैत्य न काहँ रंचनहिं दीन्हा॥ ते सर्वासुर अतिरुट धारी। धाये देवनकाहँ प्रचारी ९८ सिंह नादकरि बारहिं बारा। अतिरव शंख कीन्ह धुधुकारा॥ याबिधि असु-रन क्रोधितदेखी। देवराज किय क्रोध बिशेखी ९९ ऐरावतादि करिपर चढ़िकै। शुशुभे इन्द्र अग्रदल बढ़िकै॥ मानहुं सूर्य्यो-दय गिरि ऊपर। शोभित भे सुरपतिकरि भूपर २०० तिन के चहूं दिशा सुर ठाढ़े। नाना वाहायुध बलबाढ़े॥ लोक-पाल सहगंण सबआंये। बाय्वग्निहुवरुणादिसुहाये २०१ या बिधिरणउत्साहहि धारी। बीरबचन बोलत सुखकारी॥

आह्वयंतक्रोधित अतिभारी। युयुधुर्द्धन्द्वयोधिरुटधारी २०२दो०।
तारकेण गुहलरतभे बलिरिंद्रेणयुयोध। हेतीसों जलपति भिरे
मित्रप्रहेतियुयोध २०३ चौ०। यमसोंकालनाभ रणठाना। बि-
श्वकर्म मयसों सुखमाना॥ शंबरत्वष्ट्रा लरनसुलागे। सविता
सहित बिरोचन गाजे २०४ अपराजित अरुनमुचि सुहाये। वृष
पर्वण अश्विनौ महाये॥ सूरजकीन्हो समर अकूता। बलिसुत
बाणज्येष्ठशतपूता २०५ राहुसमेत सोमरणठाना। अनिलपुलो-
म्नाअति सुखमाना॥ शुंभनिशुंभ समेतमहाना। देवीभद्रकालि
रणठाना २०६ जंभ समेत वृषाकपिबीरा। महिषासुर बिभावसू
धीरा॥ इल्वलारुवातापि समेता। कामदेवअजसुतमुदसेता २०७
उत्कलमातृ समेतसुहाये। बृहस्पतिश्चोशन सुखपाये॥ नरकस-
मेत शनिश्चर लरहीं। मरुतनिवातकवच रणकरहीं २०८ बस-
वलरतकालेयं समेता। बिश्वदेव पौलोमसहेता॥ रुद्रक्रोधवश
गणसहलरहीं। नानाभांति पराक्रम करहीं २०९ या बिधिसमर
सुरासुर जुटिकै। अस्त्रप्रहार करतझट छुटिकै॥ जोरीसों जोरी
सब बीरा। भिरिआंयुध मुंचतरणधीरा २१० निजनिज बिजय
मनोरथ करिकै। नानाअस्त्र तजत मुदभरिकै॥ असिभुसुंडितो
मरहुनराचा। चक्रगदर्ष्टित्यागि रणराचा २११ पट्टिशशक्त्युल्मु-
कादि तजिकै। प्रासपरस्वधादि रणसजिकै॥ परिघभल्लनिस्त्रिं
शसमेता। मुद्गर भिंदिपालदुखकेता २१२ त्यागि त्यागि आ-
युधसुद भरिकै। शिरउरकर छेदनरुटधरिकै॥ गजतुरंग रथक-
टेअपारा। गिरेपदाति अमित रणधारा २१३ दो०। सहारोहवा-
हन बिबिध खंडित परेअचेत। शिरधरबाहूरूकटे रणमहि शोभा
देत २१४ करपदांगुली केशनख ध्वजे ध्वाशतनुत्राण। तनुभू-
षणआदिकसबै भिन्नहोत लगिबाण २१५ रथपदरजकूसो अति
धाई। काष्ठाबियत रबिहिलियछाई॥ अंधकारअतिभयो अपारा।
सूझन आपन हाथ पसारा २१६ छन्दरामगीतिका॥ भईपूरित
मेदिनी शिरकुंडलन युतताहँ। सहित मुकुटकिरीट झलक जराय

जरितसुजाहैं ॥ रुटिततकुपरिदष्टदच्छद साभरण भुजसोह। सहायुध अँगरागलेपितपरे प्रगटत मोह २१७ चौ०। अमितक बंधतहां भयकारी। धावतरणविचस्वाशिर निहारी॥ उद्यतअस्त्र भुजनसों गहिकै। मारतभटनमहामुद लहिकै २१८ बहुतागंडक बंध कराला। धायेमर्दत कटक बिशाला॥ हयगजरथभटअग्रजु पावैं। करिचूरण महिछारमिलावैं २१६ बलिमहेंद्र अतिशयरण ठाना। छोंड़त नानायुधबर बाना॥ दशशर बलिमहेंद्र के मारा। ऐरावतहि तीनिखरधारा २२०चारिक्षणबहुपदअतिधारा। एकेना रोहंत्ततकारा॥ तिनहिं बिलोकि भल्लहरिमारी। काटिभूत धात्री मधिडारी२२१याबिधि कर्म इंद्रकोदेखी। कियदुर्मर्षा मर्ष बिशेखी॥ शक्तिमहोल्काभाति कराला। ज्वलत अग्निसममहा बिशाला २२२ मारमहेतहस्तनिजधारा। देखत इन्द्रकाटि महिडारा॥ तोमर प्रासशूल कर लीन्हा। काटिसुरेश डारिमहिदीन्हा २२३ या बिधि जोसो अस्त्र चलावा। तुरित शचीपतिकाटि खसावा॥ इहिबिधि आसुर हरिबलदेखी। भोद्भुत अंतर्धान बिशेखी २२४ प्रगटत भयो आसुरी माया। प्रगटे गिरि सुर कटक निकाया॥ बर्षनलगे वृत्तदल माहीं। जरत अग्निकी ज्वाल भ्रमाहीं २२५ शिलासटंक शिखरबहु परहीं। चूर्णीभूत देव दलकरहीं॥ महा उरग पुनि बर्षतभारे। दंदशूक वृश्चिक भयकारे२२६सिंह ब्याघ्र बाराह समेता। मर्दत महा गजन दुखदेता॥ यातुधानि कर शूलहि धारी। बस्त्र बिहीन शतन भय कारी २२७ छिंधि भिंधि इति बचन पुकारत। प्रगटे बहुराक्षस दुखकारत॥ छाये महामेघ आकाशा। परुष स्वनी भीम कृतत्राशा २२८ बर्षन लागे बिबि ध अँगारा। तड़कत बिज्ज्व बायु बलधारा॥ प्रगटित दैत्य महा शिखि कीन्हा। सांबर्त्तक इव देवनचीन्हा २२६ तदुपरि बढ़े समुद्र अपारा। प्रगटत बीचि महा खरधारा॥ अति प्रचण्ड मारु त तिहिबारी। लागी चलन महा भयकारी २३० याबिधि दैत्य रचित लखि माया। भे ब्याकुल सबदेव निकाया॥ तत्प्रति बिधि

इन्द्रादिन जाना । जानि झटित प्रगटे भगवाना २३१ सुपर्णांस
कृत चरण सुहाये। पीत बसन चख कमल लुभाये ॥ आठभुजा
सायुध सुखकारी।कौस्तुभमणिअनर्घ्यमुदधारी २३२ शुभकिरीट
कुंडल सुखछावन। आये हरि निजजन मन भावन ॥ जाक्षण
हरिता दलमधि आये। माया सर्बा सुरी नशाये २३३ जाबिधि
कोउस्वप्न दुखपावै। जागतही सब दूरिबिहावै ॥ तिमिहरि देखि
सकल दुखभागे। भयेदेव सर्बानँद पागे २३४ सो० । गरुड़ बाह
नहिदेखि करि अरिबाहन शूलगहि। मारोतुरित बिशेखि देखि
पततहरि गरुड़ शिर २३५ लीलासों गहितौन कालनेमि बाहन
सहित। बधिडारो महिजौन देवनको दुखदेत भो २३६ दो०।
मालि सुमाली युद्ध हितआये देखतधाइप्रेरिचक्र हरिखंडि शिर
दीन्हो भूमिगिराइ२३७चौ०।अति हर्षितसुर भये महाना।निज
पर कृपादेखि भगवाना॥ मारनलगे अस्त्रनिज लैकै।नाना भांति
पराक्रम कैकै २३८ बैरोचन हित अति रुट करिकै। धाये इन्द्र
बज्र निज धरिकै ॥ हाहा कार भयो तिहि बारा। हरि बलिसों
इमि बचन उचारा २३९ नट्वन्माया मूढ़सवांरी। जीता चहत
सकल सुरभ्मारीं ॥ माया रचिइच्छा जे करहीं। हम सुरलोकजाइ
मुदभरहीं २४० तान्दस्यून्विधुनोमिमहाना। पूर्वस्माच पदा
दधजाना ॥ सो. मैं तव दुर्मातिन काहीं। डारौं काटि शीशभूमाहीं
२४१ याविधि बचन इन्द्रके सुनिकै। बोले बलिहु बचन मनगु-
निकै ॥ इहि संग्राम भूमिमें आई। प्रेरित कालकर्म बरिआई२४२
कीर्तिर्जय अरु अजय महाना। मृत्यु आदि सबनुक्रम जाना ॥
तौन काल रसना यह सोई। देखत रण पंडित जे कोई २४३
छन्दगोपाल। नहिं शोचत नाहिं हर्षत तौन। तुमसूरुप इमिभाख
तजौन॥तुम येवचन कहतहौ जोइ। साधु शोच्य हम गुनतन
सोइ २४४ दो०।इमिकहि बलिनाराच धनु।कर्णालंबित तानि॥
मारो इन्द्रहि लगतहरि लीन्ह बज्ररुट ठानि २४५ चौ० । मारो
इन्द्र बज्रबलिकेरे। गिरे धराणि ब्याकुल रथतेरे॥ छिन्न पच्छइव

अचलसमाना। आये धरणि बीर बलवाना २४६ जंभासुर बलि सखा सुहायो। मित्रहि गिरो तुरित लखि धायो ॥ सिंहवाहसो गदा सुधारी। जत्रु स्थल हरिके द्रुतमारी २४७ ऐरावतहि गदा पुनि मारा। लागेसो तन दशा बिसारा ॥ गदा प्रहार व्यथित गज भयऊ। ह्वै विह्वल कश्मल अति लयऊ २४८ जानु टेकि धरणी तल आयो। देखत रथ मातलि द्रुत लायो ॥ रथ सहस्र सों आवृत सोई। कांची शब्द तहां अति होई २४९ तुरित त्यागि गज रथ असवारा। ह्वेत भये सुरपति तिहि बारा॥ जंभासुर इंद्रहि रथ देखी। ज्वलितशूल पुनि तजो बिशेखी २५० लागो सो मातलि के आई। देखि इन्द्र उर क्रोध बढ़ाई ॥ लीन्ह बज्र अति तीक्षण धारा। मारि काटि शिर उरवी डारा २५१ जम्भहि इन्द्र,मृत्यु बश लाये। नारदऋषि उत जाइ बताये॥ तासु ज्ञाति सुनि नारद बैना। क्रोधारक्त भये द्रुत नैना २५२ नमुचि पाक बल आदिक बीरा। धाये क्रोधवन्त रणधीरा॥ इंद्रहि परुषबचन अति कहिकै। मर्मस्थल महँत उर दहिकै २५३ बाणन की बरषा अति छाई। गिरि पर मानहुँ मेघ महाई॥ दशशतबाण तुरित तिनमारा। अतिलाघव अति पौरुषधारा२५४ शत शर मातलि के तिन मारे। रथ सावयव न रञ्च उबारे॥ सकृन्मोक्ष सन्धान नराचा। अत्यद्भुत रण मण्डल माचा २५५ बहुरि नमुचि उर क्रोधहि धारी। बाण पञ्चदश हने प्रचारी॥ स्वर्ण पुंख युत बाण कराला। मारि मेघ सम गरजि बिशाला २५६ दो०। चहुं ओर शर कूट सों सारथि इन्द्र समेत। लिये छाइ रथ अश्व युत देवन को भय देत २५७ चौ०। हांहाकार ऋभव गण कीन्हा। नायक बिन धीरज तजि दीन्हा॥ जैसे बणिक भिन्न जलयाना। भये देव इमि दुखित महाना २५८ छन्द रामगीतिका। बद्ध पञ्जर सों शचीपति भये बाहर देखि। साश्वरथध्वजसाग्रणी सहसेन सुभग बिशेखि॥ रोचयन्निज तेज सूरज इव क्षपात्यय जानि। दिशाकाश वसुन्धरानृप

प्रजहि जिमि सुखदानि २५९ चौ० । पूतना लखि शत्रुन सों खण्डित । लिय हरि बज्र क्रोधि रण पण्डित ॥ तत्क्षण अष्टधार सो मारी । शिर बल पाक काटि महि डारी २६० दो० । नमुचि तासु बध देखि कै शोकामर्ष समेत । कीन्हों परमोद्यम तहां इन्द्रहि मारन हेत २६१ अश्मसारमय शूल गहि घण्टा बद्ध महान । भूषित हेमप्रगृह्य रुटि हत असि इबिधि बखान २६२ चौ० । त्यागो तुरित इन्द्र बध हेता । निनदन्मृगपति इव रण खेता ॥ आवत सजव खमध्य निहारी । किय सहस्रधा हरि इषुमारी २६३ पुनि क्रोधित निज कुलिश सँभारा । ताकि नमुचि शिर मध्य प्रहारा ॥ अति बल तजो इन्द्र पवि जोई । बेधि न सको त्वचा शिर सोई २६४ भयो परम अद्भुत यह सोई । त्वचा नमुचि शिर कटो न जोई ॥ बज्र न काटिसको शिर काहीं । भे भय भीत इन्द्र मनमाहीं २६५ का यह भयो भूमि मधिआजू । लोक बिमोहन प्रगटो काजू ॥ जौन बज्रलै गिरिपर छेदा । सोई आजु कीन्ह उर खेदा २६६ अति तप सार त्वाष्ट्र बलभारी । मारि बज्र सों दिय महि डारी ॥ अपर महाबल दैत्य अपारा । भें बहु बार काटि महि डारा २६७ सोई बज्र आजु मुँह फेरा । असुर अल्प ऊपर इहि बेरा ॥ ब्राह्मण काहँ दण्ड नहिं दीन्हा । बिप्र वृत्ति नाहिंन हरि लीन्हा २६८ इमि किय शक्र बिषादअपारा । तबहिं शारदा काश पुकारा ॥ सूखे ओदे सों नहिं मरिहै । बर्ष सहस्रन अति रण करिहै २६९ मैं याको दीन्हों बरसोई । सूखे ओदे मृत्यु न होई । ताते और उपाय बिचारौ । हे संक्रन्दन शत्रुहिं मारौ २७० छन्दगोपाल । सुनि आकाश गिरा मघवान । मानसमें कीन्हों तब ध्यान ॥ ध्यायन्फेना मनमें आव । करि बिचार उर हर्ष बढ़ाव २७१ दो० ॥ नहिंसूखो नहिं ओदयह करि मनमांह बिचार । इंद्रफेन लै नमुचि शिर मारिकाटि महिडार, २७२ चौ० । नमुचिहि इंद्र मारि महिडारा । लखि अस्तुति किय ऋषिन अपारा ॥ फूलन की वर्षा बहुलाये । गंधर्बाधिप शुभगुण गाये २७३ देवन पुनि

दुंदुभी बजाई । अप्सरान किय नृत्य सुहाई ॥ अपर देवता निज
निज जोरी । कीन्हमहारण रारि न थोरी २७४ वायु अग्नि
वरुणादिक जेते । बली असुरमारे सबतेते ॥ जिमि केशरी क्रोध
करिधावै । क्षुद्रमृगा वधिभूमि गिरावै २७५ तैसे देव पराक्रम
करिकै । असुरन बधत गिरत महि मरिकै ॥ या विधिभो संग्राम
महाना । जूझे अमित दैत्य बलवाना २७६ दो० । संक्षय असु-
रनको निरखि विधि नारदहि पठाव । वारण कीन्हो आइतिन
पुनि विधि वचन सुनाव २७७ तुम अमृत पायोसबै नारायण
भुजछाहँ । शोभावढ़ी अपार अब त्यागिय विग्रहकाहँ २७८
सो० । सुनि नारदके वैन क्रोध त्यागि सब देवता । चले समर
तजिऐन गीयमान अनुचरनकरि २७९ चौ० ॥ रहे वशिष्ठा सुर
रण जेते ।,पाइ नारदायसु सबतेते ॥ लैवलिकाहँ अस्तगिरि
गयऊ । तहां दैत्य गुरुदर्शन भयऊ २८० अवयव शीश हीन
नहिं जिनको । भार्गव तुरित जियायो तिनको ॥ वलिरुशनस
कृपया सुखदाई । प्रत्यापन्नेन्द्रिय मतिआई २८१ यद्यपि वलि
हारे रण भारे । तदपि खेद निज चित्तन धारे ॥ लोक तत्त्वके जा-
नन वारे ॥ दुखसुख सम जग धिषण पनारे. २८२ या बिधि
उशना बलिहि जियायो । तब बलि गुरु सेवा मन लायो ॥
भृगुन केरि सेवा अति कयऊ । अर्थ निवेदन करत सुभय-
ऊ २८३ ब्राह्मण भृगव वलिहि इमि देखी । तिनपर कीन्ही
कृपा बिशेखी ॥ द्यो जीतनं बलिके मन आयो । बिश्वजिता ति-
न यज्ञ करायो २८४ महाभिषेक कीन्ह सब बिप्रा । भे बलितेज
सहित अति चिप्रा ॥ तबहिं सुभग कांचन रथ साजी । इंद्र
तुरंग सरिस शुभ बाजी २८५ सिंहध्वज शोभित अति नी-
को । धनु छबि गोर मदाइनि फीको ॥ पुरट नद्ध इषुधी द्वौ
राजत। कँवच दिव्य तन शोभा साजत २८६ माला अमल दी-
न्हप्रह्लादा । शंखजलज युतआशिर्वादा ॥ याविधि विप्रार्जित
रणसाजा । कल्पित स्वस्त्ययनहु सुरराजा २८७ कीन्ह प्रणाम

प्रदक्षिण कीन्हा । आज्ञापुनि प्राह्लाद कि लीन्हा ॥ कीन्हप्रणाम बहुरि शिरनाई । रथपर जाइचढ़ सुखपाई २८८ भृगुदीन्हो जो सुरथ महावा । तापर चढ़ि अति शोभा पावा ॥ सुभगमाल धनु खड्ग बिराजत । इषुधीहेमांगद छबि छाजत २८६ मकराकृतकुण्डल मनमोहैं । हव्यबाट इवरथ बलि सोहैं ॥ तुल्यैश्वर्य बलश्री धारी । यूथप दैत्य सहितभयकारी २९० नेत्रन सोंजनु पियतअकाशा । नेत्र दृष्टि जंनुजारत आशा ॥ लैइमि असुर सेन समुदाई । पहुँचे बासव पुरीमजाई २६१ मानहुँ रोदसि काहँ कपावत । बलि शचिपति पुर कहँ द्रुतआवत ॥ याबिधि बलि देखा पुरआई । नानाशोभा बरणिन जाई २६२ शोभित उपवन अरु उद्याना । नंदनादि शोभित बननाना ॥ कूजद्विहंग मिथुन बहुसंगा । गावत मत्तमधुव्रत अंगा २९३ सुहित प्रवाल पुष्पफल भारैं । लचीं भूमि अमरद्रुमडारैं । सारसहंसचकोर सुहाये । चक्रवाक कारंडवछाये २९४ नलिनीपत्रमहासुखदाई।क्रीड़ा करत देवतिय आई ॥ गंगाकाश महासुख कारी । आवृत परिख भूतमुदधारी २६५ अग्निबरणप्राकार सुहावा । साट्टालउन्नतछबिपावा ॥ पट्टकपाट रुक्ममयसोहतं । गोपुर द्वार फटिकमयमोहत २६६ चत्वरसभारथ्य मनभाये । तहँबिमान कोटिन छबिछाये ॥ शृंगाटक मणिमय अतिराजत । बिद्रुमबज्रबेदिसुख साजत २६७ बिश्वकर्म रचना सुखदाई । जियालाल किमि बरणि सिराई ॥ यत्रनित्यबय रूपसुहाई । श्यामा बिरजाम्बर सुखदाई २६८ शोभित रूपवती इमिनारी । अर्चिसमेत अग्नि तनुधारी ॥ कवरसुरस्त्रि भिन्नच्युतमाला । लगिखगलावतसुरभि बिशाला २६६ हेम जाल अच्छनि के द्वारा । धूमागुरु निकरत सुखधारा ॥ पांडुर आतपत्र को छावैं । मारगचलीं अप्सराजावैं ३०० मुक्ताहेम मणिन सुबिताना । केतु पताका बलभीनाना ॥ पारावत अरुभृंग शिखण्डी । सुन्दर नादत नादा खंडी ३०१ बैमानिक तिय मंगलगाना । सुनतश्रवण छूटैंमुनि ध्याना ॥

शंखानक दुंदुभिहु मृदंगा।बीण।मुरज तालयुतअंगा२०२ ऋष्टिवे
ण आदिक बहु बाजा। नृत्य सगति युत गान समाजा ॥ या
बिधि पुरी महा सुख पूरी। निरखत होत सकल दुखदूरी ३०३
जहां न पुरुषाधर्मी जाहीं। भूत द्रुह खल शठहू नाहीं ॥ मानी
कामी लोभी जेई। यापुरकाहँ न आवत तेई ३०४ तौनी देव
धानि सहसेना। गये विरोचन सुत बलऐना ॥ चारौ ओर घेरि
तिन लीन्हा। शुक्रदत्त दरसो रव कीन्हा ३०५ महा शब्द मय
शंख बजावत। इन्द्रयोषितन भयउपजावत ॥ जानि इन्द्र बलि
उद्यम एहा। मनमें बहु कीन्ही सन्देहा ३०६ सर्वदेव गण सङ्ग
लवाई। गुरु सों बचन कहें इमि जाई ॥ भगवन्पूर्व बैरिबलिरा-
जा। आये करि अविषह्य समाजा ३०७ काके तेज बढ़ो बल
भारी। श्रीगुरु मोसों कहौबिचारी ॥ नाहिन कोऊजीतन वारो।
कौनौ भांति महा बलभारो ३०८ मुखसों पान्न करत द्योजानौ।
रसनासों चाटत दिग मानौ॥ दाहत मनहुँ नयनदश आशा।
प्रलय अग्नि जनुकीन्ह प्रकाशा ३०९ यह कारण ममकहोबु-
झाई। तेजओज सहबल अधिकाई ॥ इहिविधि सुनतइन्द्रमुख
बानी। बोलेदेवगुरू सुखमानी ३१०, जानो मैं मघवन यहसबी।
जासों बलिआये सहगर्बा ॥ दीन्होतेज शिष्यकवि जानी।
ब्रह्मबादि भृगुबंशिन आनी ३११ तुमसम तुमसमान जोसोई।
जीति न सकतईश बिनकोई॥ यमअरुकाल सदल चलिआवैं।
बलिसो जीत आज नहिंपावैं ३१२ तातेसकल देवगृहतजिकै।
जिततित जाहुस्वर्ग तजिभाजिकै ॥ ऊर्जितबिक्रमाबिप्रप्रसादा।
बढ़ोतेज लंघित मर्यादा ३१३ जो अपमान करैइन केरा। सानु
बंधनाशै इहिबेरा॥ गुरुके बचन सुनत सुरराजा । द्योतजिगे
निज जानि अंकाजा ३१४ जित तित देव भाजि सबगयऊ ।
इन्द्रासन शोभित बलिभयऊ॥ जीति त्रिलोक स्वबशकरि ली-
न्हा। पाइ त्रिविष्ट पदरस कीन्हा ३१५ जग विजयी निज
शिष्यहि गुनिकै। भार्गव यज्ञ करायो पुनिकै ॥ शत हयमेधके